व होइ । पाछेंफेरिअनुभवनहोइ । तवयाकोंबिरहहोइ
तवबिरहकरिकेंभगवांनमेंभाववढे । तवयाकोबिस
नीअवस्थाहोइ । तवश्रीठाकुरजीयाकोंअनुभवजतावें
तवयासोंभगवांनबिनारह्योनजाइ । तवदेहानुसंधा
नुभूलिजाइ । कवहूंहसें । कवहूंरुदनकरे । कवहूंविकल
होइजाइ । याप्रकारबिरहकरतकरतभावद्रढश्रीठाकु
रजीमेंसिद्धहोइ । तववहसंन्यांसीघरमेंसर्वथानरहे
तवजोघरमेंसर्वथारहेतोवाधकहे । तातेंऐसीदिसा
होइ । तवघरकोंछोडिअरन्यमेंजाय । ताकोंइंद्रीवाध
कनहोइ । काहेतेंउनकोंदेहानुसंधानुनांहीहे । तोउन
कोंविषयकहावाधककरेगो । जेसेंमहादेवजीकोंकाम
आयो । देवतांनकेकहेंसोंउलटोकामभस्महोइगयो
परंतुमहादेवकोंकछुवाधकनभयो । तातेंऐसोअनुभ
वजाकोंहोयसोसुखेंघररहोचाहे । जाकोंअनुभवऐ
सोनभयोहोइसोआपनेघरकोंसर्वथामतिछोडियो
घरहीमेंसाधनकरतकरतजबऐसीदिसाहोइ । तव
संन्यांसलेकेंगृहस्थाश्रमकोंबेसबदले । तवगृहादि
कसगरेकुटंबीकोंमोहछूटिजाय । ताकेअर्थसंन्यांस
लेअपचराकोपीनधारनकरिकेंपाछेंजनेउकोंजराइ
केंपीजाइ । सोयहजनमतेंदूसरोजनमभयो । पाछेंका
हूसोंसंभावननकरनों । दूसरोगुरूकरनों । याप्रका
रगुरूकोभावसिद्धभयोहोइ । ताहीप्रकारवहरीतसों
अपनेमनमेंभावनाकरनी । याप्रकारजोगृहस्थाश्र
मछोडिकेंसंन्यासलेइतोकृतार्थहोइ । औरप्रकारबा
धकहे । काहेतेंकलिकालदुष्टहे सगरेधर्मनकोंनासक
र्ताहे । तातेंऐसेअनुभवभएबिनांगृहस्थाधर्मकोंन

छोडनों। औरजोजीवग्रहादिकमेंअनेककुटंबीकेकलेस
करिकेंतथाघरमेंखायबेकोंनमिल्यो। तथाऔरहूअ
नेकप्रकारकेघरमेंदुःखहे। ताकरिकेंअपनेग्रहस्तकों
भेषबदल्योमोंछमुंडायो अचराकोपीनकोसाधनकी
यो। तहांसगरेकुटंबनेंतोभेषदेखकेंयामेंतेमोहछो
ड्यो। याकोंलौकिकमेंकोईदंड भेषदेखकेंनहोइ। प्रथम
सिद्धहोइ। पाछेंयहनिर्भयहोइ। जोअबकुटंबकोदुख
तोछुड्यो। पाछेंखांनपांनबिनांतोचलेनांही। इंद्रीकोदव
सभईनांही। तबतीर्थनमेंजाइ। तहांतोकोईयाकोंपूछे
नांही। तबऐसोसंन्यासीहोइ। सोपाषंडकरेकछुसाधन
लौकिकराजसीलोगनकोंदिखावेजोमेंदसदसदिन
भूखोरहेतहूं। सबनकेआगेंकीर्तनादिकअनेकवैराग्या
दिककीवार्ताकरे। अपनेंभगवद्धर्मविषेंसठहरावे
तबजगतमेंपाषंडकरिकेंखानपांनसबलौकिकसिद्ध
होइ। सोजहांलौकिकसिद्धभयो। तहांमनमेंतोकामनां
भरीहे। ताकरिकेंतत्कालविषयमेंप्रवर्त्तहोइ। तबऐसे
संन्यासीकोंहोउलोकमेंहांनिहोइ। लौकिकमेंहूंसबलो
गनिंद्याकरें। जोसंन्यासीकोभेषलेकेंबिषयादिकमेंप्रव
र्तभयोहे। औरवैदिकधर्महतोसोपाषंडकरिकेंनासभ
यो। ताकोफलपाछेंनर्कहीहोइ। ताकोमोक्षकबहूंसिद्धि
नहोइ। ताकोभेषदेखिकेंलौकिकमेंकुटंबनेंत्यागकीयो
पाछेंपाषंडदेखकेंवैदिक। अपनोंमहातमहतोसोनष्ट
यो। तबभगवानहूंवाकोत्यागनकरें। तहांकोईकहेजो
पाषंडकरिकेंलौकिककामनांकरिकें। तथावैदिककरि
केंहूंजोभगवत्स्मरणकरे। ताकोहूफलदेतहें। सोयह
संन्यासीनेंभगवद्धर्मकछुतोनकीयो। सोयाकोंनकह्यो

सोकाहेतेयाप्रकारकोईकहे। तहांकहेतहें। जोगृहस्था ६
श्रमकोंछोडिकेंभेषबदल्यो। उज्वलसंन्यासीकोभेषलीयो
पाछेंपाषंडकरनलागेपो। तामेंभगवद्धर्मकोअपरा
धहोतहे। सोभगवानकेअपराधतेंअधिकअपराधहे
काहेतेगृहस्तहोइकेंविषयादिकमेंआसक्तहें। ताकोंपापा
दिकलागे। परंतुभगवानअप्रसंन्नहोइ। काहेतेंगृहस्त
कोभेषहीऐसोहे। औरसंन्यासहेसोतोउत्तमभगवद्धर्म
तकोवंसोहें। ताकोंलेकेंपाषंडकरे। सोभगवानसोंसह्यो
नजाइ। काहेतेलोकिकमेंसबकोउहे। संन्यासीकीनिंद्या न
करें। सोसंन्यासधर्मकीनिंद्यालोगनसोंसुनिकेंभगवा
नअप्रसंन्नहोइ। तातेंउहसंन्यासीभगवद्धर्मकछू
करेलौकिककोदिखाइबेकेलिऐसोताकरिकेंमोक्षफल
नहोइ। मोक्षफलकोसाधनकूनहोइ। इतनोंफलहोइ
जोलौकिकदेखबेकेअर्थकरतहें। सोलोकिकखानपा
नादिकसिद्धहोइ। सोसाकितारे। तातेंवेदसास्त्रवेद
केसाधनसंन्यासधर्मसबसत्यहे। सोकलिकालकरि
केंजीवसोंवेगिनबनिआवे। तातेगृहस्थाश्रमकोंविना
विचारेंछोड्नोंनाही। वेदकीमर्यादाअपनेवर्णाश्रमको
धर्मताकेअनुसारचलेतोभक्तिबढे। याप्रकारजवबि
रहहोइ। व्रजभक्तनकेभावहें। ताकीभावनांसिद्धहोइ।
तबभेषबदले सोयहमुख्यनजानेंजोभेषबदलें। ते
संन्यासलेकेंकृतार्थहोउगो। यहविचारेजोभावकीभा
वनासिद्धभयीहे। इंद्रियाध्यासबमिट्योहे। सोअब
कुटंबयांमेंप्रतिबंधकरतहें। ताकेनिवर्त्यर्थभेषबदलें
सबछोडिमोंनहोइ। भगवद्स्मरणपरमात्मामेंमन
लगाइकृतार्थहोइ। याप्रकारसातश्लोककोनिरूपनभ

स॰टी॰ यो ॥ अववादी आसंका करत हैं ॥ जो कहा पहलें गुरु सों कृता
१० र्थ न होइ ॥ जो संन्यास लेकें इसरो गुरू करे ॥ सो इसरे गुरू
में कहा बिसेष गुन हैं ॥ जो कहा इसरो गुरू करे ॥ और भाव सों
कहा ॥ ताको भाव कौंन प्रकार होइ ॥ और भावना कीए तें भग
वद्प्राप्ति कैसें होइगी ॥ अनेक मोक्ष के साधन छो उभा
वनां में कहा अधिक हैं ॥ या प्रकार को ई प्रस्न करे ॥ तहां क
हत हैं ॥ श्लोक ॥ कौंडिन्यो गोपिका प्रोक्ता गुरुव साधनं च तत
भावो भावनया सिद्ध साधनं नान्यदीस्यते ॥ ६ ॥ याको अर्थ ॥ अ
बक हत हें ॥ जो संन्यांस ग्रहण करे ताको गुरू सर्वथा कस्यो
चाहिए ॥ सो बेद की मर्यादा हे जो जेसो कार्य करनो होइ ॥ तेसो
ई गुरू करिए ॥ जो बिद्या पढनी हो तो पंडित गुरू करिए
जो सास्त्र बांधने होइ तो सस्त्रधारी क्षत्री कों गुरू करिये जो
जेसो गुरू करिए ॥ जितनो गुरू कों नत होइ ॥ तितनो कार्य
सिद्ध होइ ॥ पाछें बिसेष गुन सीखनों होइ तो गुरू की आज्ञा
लेकें और सों सीखतो हतो गुरू देखिबे में और गुरू भयो
परंतु अज्ञा को यो ॥ यह करिकें मुख्य पहले ही को गुरु
हे ॥ तेसें ही गृहस्थाश्रम में हतो ॥ तब तो भगवद्मार्ग जा
निबे के लिए साधन मात्र कों करे ॥ सो गुरू बिना कष्ट कर्म
को साधन फल बाकों कष्ट होइ नाही ॥ सो गुरु की यो जा प्र
कार गुरु ते मर्यादा बांधि बतायो ॥ ताही अनुसार भग
वद्धर्म को आचरण करे ॥ सो आचरण करत करत जब
श्रीठाकुरजी कछुक कछु अनुंभव जनावन लागे ॥ तब या
को प्रेंम भगवांन में बढे बिरह बढे जेसें ऊपर कहि आ
ए ॥ ऐसी दिसा होइ कबहूं रोवे ॥ कबहूं हसे कबहूं मूर्छा
होइ ॥ कबहूं नृत्यादिक करें ॥ कबहूं गांन करे तब ऐसे गृ
हस्थ नों कुटुंबादिक को प्रतिबंध पडे काहे ते बहलोकि

ककार्यकरायोचाहे॥ सोतोयासोंकछुहोइनांही॥ तबलौ
किकसेंकुटंबयाकोप्रतिबंधकरें॥ तातेंयहआपनोंभेष
बदलेसंन्यासीकोभेषकरे॥ जनेउजरायकेपानकरि
जाइ तबसबकुटंबयाकोंछोडिदेइ॥ तबयहजीवक्षे
सोगुरूकरे॥ जोकोजिन्परिखीखबरभएहे॥ सोअनंतसे
ञाभगवानकेलिएघरतेनिकसे॥ सोयहसंकल्पकरि
केंनिकसेजोप्राणजावतोजाव॥ परंतुभगवानकेप्राप्त
बिनाकोईप्रकारघरकोमुखनदेखनो॥ ऐसोसत्यसंक
ल्पमनमेंधारिकेंजाप्रकारगुरूकोंअनुभवभयोहोइ॥
जाभावमेंस्थिररहेंनों॥ ऐसोगुरू[illegible]राकरनों॥ सोयह
मर्यादामारगीयसंन्यासीकीरीतिहे॥ औरपुष्टिमारगी
यसंन्यासीकीरीतियहहेजोप्रथमश्रीआचार्यजीद्वारा
नामनिवेदनसिद्धहोइ॥ सबपुष्टिमारगमेंसरसाभ
यो॥ सोगृहस्थाश्रममेंकुटंबजोसबअनुकूलहोइ॥ तोउ
नसोंमिलकेंभगवत्सेवाकरे॥ जोअनुकूलकुटंबीनहो
इ॥ तोआपुन्यारोरहेंगृहस्थाश्रममेंभगवद्सेवापु
ष्टिमार्गकीरीतिसोंकरे॥ सोप्रथमतोश्रीआचार्यजीकेस्व
रूपकीभावकीब्रजभक्तनकेभावकोस्वरूपवर्ननननाही
हें॥ तातेंभगवद्सेवाकरे॥ औरश्रीआचार्यजीकोस्मरण
गुरुरूपजानिकेंकरें॥ सोप्रथमगुरूपाछेंजबसेवाक
रतकरतश्रीठाकुरजीनवकछूअनुभवजतावें॥ तबय
हजीवकोंश्रीठाकुरजीमेंस्नेहहोइ॥ औरबिरहहोइ
जोकबमिलेंगे॥ तबव्यासउत्पन्नहोइ॥ जोऐतोसाक्षात
श्रीस्वामिनीजीरूपहें॥ तबयहजीवकीसगरीइंद्रीबिर
हकरिकेंमनकेबसहोइजाइ॥ तबयहपुष्टिमारगीय
कोप्रेमउत्पन्नहोइ॥ सोकबहूहसेंकबहूंरुदनकरेंक

वस्तुंमूर्च्छाहोइ।इत्यादिकदिसाहोइ।तबयहपुष्टिमार्गीय
भक्तकोंलौकिकबैदिकआपुहीतेछूटे।तथाआपुछोडिदे
हि।।पाछेऐकांतबैठे।।जहांलौकिकसंसारीकोईनरहे।तथा
अरन्यजोवनतहांरहे।।ऐसेस्थलमेंजायकेंसंन्यासी
जेसेंदूसरोगुरूकरे।।तेसेंहोइ।इहांप्रथमश्रीआचार्यजी
कोंश्रीस्वनिरूपसोंगुरूकरिकेंजांनतहतो।।सोसरूपजां
नततबभयो।जबश्रीआचार्यजीमहाप्रभूकोसरूपश्री
स्वांमिनीजीरूपजांनें।।सोगोपीजनतिनकेभावकीभाव
नाकरे।।सोईपुष्टिमारगमेंदूसरोगुरूअन्यथाऔरना
ही।।सोगोपीजननेंगुरूकरिकेंयहभावदृढराखे।।जेसें
गोपीजनव्रजबरासपंचाध्याईमेंघरकोंछोडिकेंश्रीठाकु
रजीकेपासगई।।तबश्रीठाकुरजीनेंघरपठायबेकेलि
ऐअनेकभांतिसोंमर्यादारीतिकोंसमुझाऐ।।परंतुगो
पीजननमांने।।सा[illegible]हठकरिकेंकीऐ।।तेसें
ईपुष्टिमार्गी[illegible]लौकिकबैदिकसबछोडें।।ऐकां
तमेंगोपीजनकेभावकीभावनांकरे।।सोदृढतासोंकरें
जोकदाचितश्रीठाकुरजीरूआयकेंसमुझावें।।तऊअन्य
धर्ममेंप्रवर्त्तनहोइ।।लौकिकबैदिककछूनजांनें।।एक
रसअखंडभावनाकरे।।तोपुष्टिमारगीयकोंयारीतसों
भगवद्प्राप्तजोलीलामेंप्राप्तहोइ।।तातेंकौरिन्योगोपि
काश्रोत्तागुरूवसाधनेंचतत्।।कहे।।तामेंयहजतायेजो
मर्यादामार्गीयसंन्यासीकोंकौंडिन्यरखीस्वरूकीभावना
करे।।औरपुष्टिभक्तहें।।सोगोपीजनकोंगुरूकरें।।औरपु
ष्टिपुष्टिभक्तहों।सोगोपीजनकेभावसोंप्राप्तहोइ।।तहांवा
दीकहेतहें।।जोमर्यादामार्गकोंतोकौंडिन्यरखीस्वरगुरु
कहे।।औरपुष्टिमार्गीयसंन्यासमेंगोपीजनकोंगुरूकरे

औरमर्यादापुष्टिजीवहोइ॥सोसंन्यासलेकेंकौनकोंगुरुक
रें॥याप्रकारवाहीप्रश्नकरें॥तहांकहेतहेंजोमर्यादापु
ष्टिऐसोगुरुकरें॥कोउन्योकोउन्पदेसनहांरुकिमिणी
रहेती॥सोरुकिमिनीजीमर्यादापुष्टिभक्तसोरहहजा
रऐकसोआठमेंमुख्यहें॥तातेंमर्यादापुष्टिभक्तजबसं
न्यासलेइ॥तबरुकिमिनीजीकोंगुरुकरें॥सोकौनप्रका
रगुरुकरें॥रुकिमिनीजीकेभावकोस्मरणकरें॥जबरु
किमिनीजीब्राह्मणकेहाथपत्रलिखिकेंपठायोहे॥श्रीठा
कुरजीकेपासतामेंलिख्योहे॥जोप्राणप्रियप्रभुपतीजोतुं
ममोकोंव्याहिवेकोंकदाचित्‌नआवोगे॥तोयहमेरीदे
हहेसोसर्वथामेंछोडोंगी॥मेंतोसबछोडिकेंअपनीओ
रतेंतुमकोंव्याहिचुकीहों॥तातेंअबमेंतिहारीहों॥तुम
चाहोमारोचाहोजिवावो॥परंतुअन्यपुरुषकोमुखस्व
पनमेंहूंनदेखोंगी॥याभांतिदृढसनेहअनेकभांतिसों
जताऐ॥सोपत्रश्रीठाकुरजीनेंबांचेतबतेतकालतहांतें
पधारे॥सोआयकेंसगरेप्रतिबंधरुकिमिनीजीकेदूरि
करिकेंपाछेंअंगीकारकीनो॥ऐसेंहोयहदृढतासंयुक्त
मर्यादापुष्टिजोभक्तहोइसोरुकिमिनीजीकोंगुरुकरि
ऐसीदृढतासोंभजनस्मरणकरें॥सोतीनोंगुरुकोंभग
वानमिलेहें॥तामेंगोपीजनतोउत्तमोत्तमरुकिमिनी
जीउत्तम॥औरकोउन्मरबीस्वरयहमध्यमताकेवलम
र्यादामार्गकोसंन्यासहे॥सोअनंतसेषजीक्षीरसागर
मेंहें॥तहांमुक्तिहोइ॥औरकेवलपुष्टिपुष्टिभगवदीयसों
ब्रजमेंसाक्षात्पूर्णपुरुषोत्तमकीलीलामेंप्राप्त॥ऐसी
उत्तममुक्तिहोइ॥जितनोंजीवकोंगृहस्थाश्रमकोंत्यागवि
नाविचारनकरनों॥जबजानेंजोभावसिद्धभयो॥तबत्या

गकरे ॥ सोभावकोंनप्रकारसिद्धहोइ ॥ जवश्रीठाकुरजीकों
पतिजांनेंजोमेरेपतितोएकभगवांनहें ॥ तिनकीप्राप्तिहो
इगी ॥ तवहीमनकोंस्वास्थ्यहोइगी ॥ अन्यथाऔरप्रकार
नांही ॥ काहेतेंलौकिकमेंपतिव्रतास्त्रीहे ॥ सोअपनेलौकिक
पतिकेसंगजरतिहे ॥ लौकिककोंसवसुखछोडिकेंतिन
कोंसतलोकमें देउनकीप्राप्तिहोइहे ॥ यहप्रसिद्धहीहे
औरजोभगवांनकोंअपनेपतिही ॥ जांनतहें ॥ लौकिकवैदि
कछोडिसंन्यासलेव्रजभक्तनकेभावतिनकीभावनामें
वाहीप्रकारसाक्षात् श्रीकृष्णकोंअपनेप्राणप्रियपति
जांनिभजनकरतहें ॥ यहीभगवद्प्राप्तिकोसाधनप्रग
टदेखियतहे ॥ औरउपायभगवत्प्राप्तिकोनांही याप्र
कारआठश्लोककोनिरूपनभयो ॥ ९ ॥ अववादीआसंका
करतहें ॥ जोजहांताईदृढसनहोइ ॥ भावसिद्धिभगवां
नमेंनभयोहोय ॥ तहांताईगृहस्थाश्रमकोंनछोडें ॥ जो
कदाचितअसंगहोइकेंघरकोंछोडेतोलौकिकमाया
केदोषलागें ॥ सोयहजीवकोंभ्रष्टकरिदेंइ काहेतेकलिका
लमेंमायाकीसबलताप्रवलहे ॥ याकोकारनकहा जोसाधन
भाववालेकोंकहामायालागे ॥ औरसिद्धभाववालेकोंसो
नांहीबाधककरति ॥ औरसाधनदसावालेकोंक्योंवाधक
करतहें ॥ याप्रकारवादीआसंकाकरें ॥ तहांकहतहें ॥ श्लोक
विकलत्वं तथास्वास्थ्यं प्रकृतिप्राकृतं नहि ॥ ज्ञानं गुणाश्च
तस्यैवं वर्त्तमानस्य बाधकाः ॥ ९ ॥ याकोअर्थ ॥ अवकहतहेंजो
संन्यासकोसाधनकरतहें ॥ तथाक्रमसक्रमभगवद्धर्म
जांनिवेकीजग्यासाकरतहें ॥ क्रमक्रमसंकछूकृतक
रतहें ॥ सोजोलौकिकवेदकछोडिदेहि ॥ घरकोंछोडिकेंजहां
जाय ॥ तहांमायायहजीवकोंबाधककरें निश्चययामेंसंदे

हनाही। साधनदिसावारेकोंसाधनसिद्धिहोंनमदेहिता
तेंज्ञांनीजोभक्तहैं। सबगोरभगवांनकोजांमतहैं। तिन
केमनकेस्वास्थ्यचित्तहैं। तातेंउनकोंबाधकहोतहे। ओर
भक्तिमार्गमेंपुष्टिपुष्टिमेंसाक्षात्श्रीठाकुरजीकेअंगसं
गकोसंबंधहोइ। तबहीस्वास्थ्यचित्तहोइ। अन्यथाज्ञान
उपदेसनतेंकबहूंनहोइ। सोप्रकारकहेतहें। जोव्रजभ
क्तव्रजमेंश्रीठाकुरजीकेलिएमहातमहतो। जोश्रीठाकु
रजीमथुरातेकबपधारेंगे। सोश्रीठाकुरजीतेमहाविर
हकरिकेंदुखजांनिउद्धवकोंपठाए। जोव्रजभक्तमेंरेवि
रहकरिकेंतप्तहें। तिनकोंज्ञानकरिकेंउनकोंसीतलस्वा
स्थ्यचित्तकरिआवो। तबउद्धवजीव्रजमेंआए। सोव्रजमें
आयकेंगोपीजनकोंएकांतमेंसबलकोज्ञानकोउपदेस
कीए। सोसुनिकेंव्रजभक्तनकोतापकीनिवृत्तिनभई। औ
रदिनदिनबिलक्षनदिसाभईजेसेंकोई। तेलबडीकढा
हीमेंतप्तहोइ। तामेंएकबूंदजलकीपरेतोउलटोभर
कोउठेपरितज्वालातिसेंहोइ। तेसेंहीव्रजभक्तनकेहृदय
मेंमहाअग्निबिरहकीभईहती। सोउद्धवजीकोंज्ञानजलकी
बूंदकीबराबरिभयो। सोजलपायकेंभीतरजोविरहहतो
सोसबगेरभीतरबाहिरहोइगयो। तबअनेकभांतिके
उपालंभदेंनलगी। परंतुस्वास्थ्यचित्तनभयो। ऐसेपुष्टि
भक्तकोंजोज्ञानादिकबाधकनकीयो। तोओरसंसारादिक
कोंखानपानविषयकहांबाधकहोइ। काहेतेयहसुद्धपुष्टि
भक्तिऐसीदिसाहोइ। सोसिद्धभक्ततिनकोंकछूंबाधकनां
हीं। ओरजोज्ञानीभक्तहैं। उद्धवजीसारिखेतिनकोंश्रीठाकु
रजीनेंज्ञानसुनायो। जोतुमबद्रिकाश्रमजाउ। तहांजाइकें
तपस्याकरो। सबगोरमोहीकोंजांनियो तबउद्धवजीकोंस्वा

स्य भयो ॥ तातें श्रीठाकुरजी कों छोडिकें साक्षात ज्ञान करि स
बैत्र ब्रह्मजांनिकें तपस्यायोगसाधन कीए ॥ ओर गोपीज
न रासपंचाध्याई में श्रीठाकुरजी अंतरध्यान भए ॥ तास
मय गोपीजन अनेक प्रकार के साधन कीए ॥ सो श्रीठाकुर
जी प्रगटे नांही ॥ तब अत्यंत बिरह करि यह कहे ॥ जो तुम या
समय प्रगट होइ के रसदांन न करोगे तो हम सब तत्का
ल देह कों बिरह करिकें त्याग करेंगे ॥ तिहारे मिलन की आ
सा है ॥ ताके लिएं देह राख्यो है ॥ ऐसो ब्रजभक्तन में बिरह है ॥
तातें इनकों श्रीठाकुरजी आय के प्रतिबंध करें तो न होइ ॥ प्र
थम ब्रजभक्त बन में रासपंचाध्याई में वेनसुनिकें आई
तब श्रीठाकुरजी के बचनसूं प्रतिबंध भयो ॥ सो तुम घ
र जाउ ॥ सो ब्रजभक्त तो पुष्टि भक्त हैं ॥ तातें इनकों भगवां
न हूं बाधक न करिकें ॥ सोमासादि बताइं द्री इत्यादिक
कहा बाधक करेंगे ॥ यातें को ॥ सिद्ध भक्त पुष्टिमार्गीय भ
क्त हैं ॥ ओर मर्यादामार्गीय हैं ॥ जो सिद्ध भक्त भए हैं ॥ तिन
कों तो माया को प्रतिबंध न होइ ॥ काहेतें वह देह इंद्री कों
ज्ञान जानें ही नहीं ॥ न दुःख ही जानें न सुख ही जानें ॥ केवल
अपनी आतमा कों सुख चाहे सो दूसरो पदार्थ ही जगत
में न जानें ॥ ताकों माया के गुन न लागें ॥ काहेतें वह जीव तो
आत्माराम हैं ॥ यह सिद्ध ज्ञानी को मोह न होइ ॥ ओर जो साध
न ज्ञानी हैं ॥ अबही साधन करत हैं ॥ जो प्राणायाम के मंत्र
मंत्र के करत हैं ॥ ह्रुदय सुद्ध करत हैं ॥ सो गुनमई है ॥ ताकों
माया के गुन लागत हैं ॥ सो भक्ष करत हैं ॥ तामें मर्यादा री
तिसों कोइ कलिकाल में संन्यास लेकें मोक्ष के साधन कों
जतन करें ॥ ताकों निश्चय करिकें माया के गुन हैं ॥ सो बंधन
करें ॥ तामें मर्यादा के ज्ञान में बाधक है ॥ ओर पुष्टि के ज्ञान

मेंवाधकनांहीहें॥काहेतेज्ञांनीकोंजोअपनेंसाधनकोव
लहे॥भगवांनकोदृढआश्रयनांही॥तातेमायाकेगुनस
वजायकेंग्यांनीकोंप्रतिवंधकरतहें॥तातेज्ञांनसिद्धवेग
होनपावेनांही॥औरभक्तमार्गकीरीतसोंजोभक्तभगवद
स्मरणसेवाकरतहें॥तिनकोंवाधकनांहीकरत॥माया
कोसांमर्थ्यनांहीजोभगवांनकेभक्तनकोंपराभवकरिस
कें॥काहेतेभगवांनअपनेभक्तनकेरक्षकहें॥ताकोदृष्टां
तकहेतहें॥जोजेसेंलौकिकमेंकोईकेदोइपुत्रहोइ॥तामें
एकतोवहोतचातुरहोइ॥वडोहोइसांमर्थ्यवांनहोइ॥औ
रएकवालकहोइ॥कछुलोकिककर्मजांनतनहोइ॥सो
दोउपुत्रमेंपिताकीप्रीतितोहें॥परंतुजेसीरक्षामातापि
तावहवालककीकरें॥तेसेंसांमर्थ्यवांनपुत्रकीनकरें॥का
हेतेवहवडेपुत्रकीचिंतानांहीजोवहतोचातुरहे॥और
वहवालकहे॥ताकेसांमर्थ्यनांहीकछुसंगतेरक्षापिताक
रे॥तेसेंज्ञांनीहें॥ज्ञांनकोवलहे॥अपनेसाधनमेंवलहें॥ता
करिकेंमातापितारूपभगवांनवाकीरक्षामेंतत्परनांही
तातेमायाज्ञानीकोंप्रतिवंधकरतहें॥सोमायाकेगुनवाज्ञां
नीकोंलागेंतोभ्रष्टवावरीहोइजाय॥औरजोज्ञांनवांनक
रिकेंविवेकधैर्यथिरबुद्धिहोइ॥इंद्रियादिकचलायवांन
नहोइ॥ताकोंमायावाधकनकरें॥ताकोमोक्षकोफलहो
इ॥औरभक्तकदाचित्भक्तमेंप्रतिवंधहोइ॥तोनष्टन
होइजाइ॥काहेतेदूसरेजनममेंभक्तिप्रगटहोइ॥जनमां
तरकोंअंतरायहोइ॥परंतभक्तिवीजनांसनहोइ॥और
ज्ञांनीसाधनमेंभ्रष्टहोइ॥सोवाकोसाधनकीयोसवनांस
होइ॥तहांकोईकहे॥जोऐसोकुसास्त्रमेंसुनेहें॥जोज्ञांनीकूं
साधनकरतकरतकालआयजायतोदूसरेजनममेंज्ञां

स॰टी॰ नफेरिहोइ ।। कोईसाधनमेंतत्परहोइ ।। औरतुमकहेज्ञा
१४ नीकोंसाधनसबनासहोइ ।। तहांकहेतहेंजोज्ञानीसाधन
करतकरतमृत्युआयजायतोसाधनमेंतोभ्रष्टनाहीं
भयो ।। तातेंइसरेजनममेंफेरिग्यांनकेसाधनमेंतत्परहो
इ ।। औरजोज्ञांनीसाधनकरतमेंविषयतथाखांनपांनको
प्रतिबंधकरिकेंभ्रष्टहोइ ।। ताकोंकीयोज्ञांनसबनिश्चय
नासहोइ ।। उहपाषंडीहोइजाइ ।। तातेंजाकोंसिद्धभावभयो
होइ ।। सोगृहस्थाश्रमकोंछोडे ।। ताकोंमायाकेगुंनप्रतिबंध
करें ।। सोअपनेधर्मतेंभ्रष्टहोइ ।। यहनिश्चयजांननों ।। या
प्रकारनश्लोककोनिरूपनभयो ।।९।। तहांवादीआसंकाक
रतहें ।। जोतुमकलिकालविषेंसंन्यासधर्मकीप्राप्तिक
ठिनकहि ।। परंतुआगेंबडेबडेरिषिमुनिननेंसाधनकी
यो ।। मोक्षफलपाऐसोऐसोदुर्लभहोतेतोउनकोंसिद्ध
नहोतो ।। तातेंज्ञांनमार्गमेंसोकहाकठिनहें ।। औरभक्ति
भगवांनकीतामेंकहासुगमबताऐ ।। साधनदोउमेंरी
सतहें ।। विनासाधनकलिमेंनसिद्धहोइ ।। विनासाधनज्ञां
नमारगरूनसिद्धहोइ ।। तबभगवंतिज्ञानकेसाधनमें
कहातारतम्यहें ।। याप्रकारवादीप्रश्नकरें ।। तहांकहेतहें ।।
श्लोक ।। सत्यलोकेस्थितिर्यानासंन्यासेनविसेषितात् ।। भा
वसाधनयत्रफलंचापितथाभवेत् ।।१०।। याकोअर्थ ।। अब
कहेतहें ।। जोमर्यादाकोसंन्यासकरे ।। सोनिश्चयसत्यलोक
कोंप्राप्तिहोइ ।। ताकीरीतिकहेतहें ।। जोसंन्यासीकोंजबदृढवै
राग्यहोइ ।। सोप्रथमजोगृहस्थहें ।। ताकोसंगछोडि पाछेंकु
टंबीतथागृहतिनकोसुखजहांभ्रमरमनतोनदेखेकेअ
रन्यजीवनतहांएकाकीहोयकेंरहे ।। केतीर्थनमेंपर्यट
नकरे ।। औरसगरीइंद्रियनकोंबसकरिकेंराखें ।। जादिन

तेगृहस्थाश्रमछोड्योहे तादिनतेजीवे तहांतांईमनइंद्री
कछूलौकिकवस्तुमेंनजाइ याप्रकारजबसतजन्मसबवे
रऐसोजन्ममेंकबहूंविघ्ननहोइ सोसतजन्मपाछें
वहसंन्यासीकोजीवब्रह्मामेंलीनहोइ सोउब्रह्मालागजोंनि
सतजन्मलोंहोइतोमोक्षकोंपावेब्रह्मामेंलीनहोइ ब्रह्म
लोकमेंस्थितरहे सोजबब्रह्माकोंमुक्तिहोइ महाप्रलय
समयतबब्रह्माकेसंगयहसंन्यासीकोमुक्तिहोइ याप्रका
रवेदसास्त्रमेंमर्यादामार्गकीमुक्तिसंन्यासलीएतेहोइ
सोकलिकालकरिकेंमुक्तिकूकेसाधनकठिनहें विषया
सक्तिजीवहे रंचकविषयमेंमनजाइ ताकोबाधकहोइ
जोकोईसंन्यासीहोइकेंविषयकरे मनमेंविषयकीअपे
क्षाराखे सोतोनर्कहीमेंजाइ सोसप्रकारमर्यादामार्गीय
संन्यासीजोहे सोसबइंद्रीनकोंनिग्रहकरिकें पाछेंसंन्या
सधर्मकेसाधनहे ताहूमेंब्रह्मतत्वपररहे योग
धारनाकरे श्रीठाकुरजीकेस्वरूपकोविचारकरे अंतर
केभेदमायाकेगुनताकोविचारकरे सर्वगेरब्रह्मरूपजा
निकेंरागद्वेषनकरे देहकोंदुखसुखमानेंनांही अ
पनीआतमाकोंसदाएकरसजानें याभांतिकेसगरेसा
धनजादिनतेसंन्यासलीयोहोइ जहांतांईजीवे तहांप
र्यंतनिर्वाहहोइ ऐसेंसतजन्मपर्यंतसंन्यासधर्मकौ
अखंडनिर्वाहहोइ तबब्रह्मलोकजोब्रह्माकोलोकऐसो
सतलोकमेंप्राप्तहोइ यहप्रकारमर्यादामार्गीयकूंमु
क्तिहोइ सोतोयहकलिकालमेंएकक्षणमनठिकांनेंनांही
रहेततोसतजन्मपर्यंतनिर्वाहकेसेंहोइ कोईऐसोहो
इजोएकजन्मनिर्वाहकरे तोहूमुक्तिनहोइ काहेतेंस
तजन्मकीमर्यादाहे सोसतजन्मलोंयहजीवसोंअसंत

कठिन हें ॥ तामें मर्यादामार्गीय संन्यासी के साधन महाकठिन
हें ॥ ताते बिना बिचारें सूत्तम बैराग्यादिक के भए ॥ तें गृह
स्थाश्रम को त्याग करनों ॥ सो केवल अज्ञान ही हें ॥ ताते मर्या
दा रीत के संन्यास में अनेक साधन महादुर्घट हें ॥ सो कहे
सो काहू सों सिद्ध होइ नांही ॥ तातें भक्ति मार्ग के साधन में र
हिकें मोक्ष फल सिद्ध होइ ॥ निश्चें रहिकें सो कहेत हें जो पुष्टि
मार्ग में भक्ति परमफल मर्यादा फल में कछु न्यून फल
मार्ग दोउन में सो मर्यादा पुष्टि में तो उत्तम करिकें भक्ति
सिद्ध होइ ॥ और पुष्टि में श्रम करिकें साधन करिकें सिद्ध
नांही ॥ तहां कृपा ही ते फल सिद्ध होइ ॥ सो कहेत हें जो ना
रदजी व्यासजी अर्जुन इत्यादिक मर्यादा पुष्टि हें केवल
पुष्टि भक्त नांही ॥ तातें बेद को अनुसार प्रथम भक्ति मार्ग
में सरल होइ ॥ पाछें नवधा भक्ति को साधन करत हें ता
में प्रथम श्रवणादिक भक्ति हें ॥ तामें आरंभ सों क्रमक्रम
करिकें नवधा सिद्ध होइ ॥ तब इनकों तद्रूपता होत हे ॥ भ
गवद्सांसक्ति के बल ते होत हें ॥ ता करिकें दोष ला
गत नांही ॥ तब ऐसे दसाई भगवान में तत्पर होत हें
तब सरीर जो वासनां सहेत हें ॥ तब पुष्टि मर्यादा भक्ति जो
भगवदीय हें ॥ तिनकों लौकिक कामक्रोधादिक बाधक नां
ही करत हें ॥ तब जीवन्मुक्ति होइ चुके हे ॥ अपनी इच्छा ते ज
हां मन होइ ॥ ब्रह्मलोक इंद्रलोक भुवलोक पाताललो
क सर्व ठोर रहो इ आवे ॥ ऐसे सामर्थ्य युक्त होत हें तिनकों मो
हन होइ ॥ तहां कोई बादी प्रश्न करे ॥ जो जीवन्मुक्ति होइ म
र्यादा पुष्टिमार्गीय भक्त हें ॥ तिनकों कबहू मोहन होइ त
ब सिवजी मर्यादा भक्त में श्रेष्ठ भक्तराज कहे वाबत हें सो
जीवन्मुक्ति ते हू अधिक हें ॥ अष्टप्रहर भगवद्ध्यान ही

मेंमगनरहतहैं॥ ऐसेमहादेवजीकोंमोहनीकेप्रसंग
मेंऐसेकांमातुरभए॥ जोपासपार्वतीबेठीहती॥ तिनकूंकी
लाजनकरी॥ मोंहनीकेसनमुखदोरे॥ सोमहादेवजीसा
रिखेमोहहें॥ तोओरभक्तकोंमोहकाहेनहोतहोइगो॥ ता
तेजेसेंज्ञांनीकोंमायाकेगुंनमोहकरतहें॥ तेसेंहीभक्तन
कोंहूमायाकेगुंनबाधककरतहोंइगे॥ याप्रकारकोईबा
दीआसंकाकरे॥ सोनकरे॥ काहेतेज्ञांनीकोंमोहहोतहेसो
कैरिंतोमायाकृतमोहहोतहे॥ ताकरिकेंज्ञांनीभृष्टहोइ
जातहें॥ सोभक्तिमार्गमेंनांहीहें॥ इहांमहादेवकोंमोहभ
योहे॥ सोमायाकृतनांही॥ भक्तनकेसनमुखमायाआइ
सकतिनांही॥ सोश्रीभागवतमेंप्रसिद्धहें॥ जोमहादेवकों
मोहभयोहे॥ सोभगवांनकों[illegible]आपमोंहनीस
रूपधरिकेंआएहें॥ सोभगवांनकोंदेखिकेंभक्तमो
हितहोइ॥ यहतोउचितहीहे॥ यामेंबाधकनांही॥ भग
वांनकीइछातेंमोहभक्तनकोंहे॥ सोजबमहादेवजी
मोंहनीसरूपकेपाछेंदोरे॥ तबमहादेवजीकोंकांम
आयकेंबाहिरगिर्यो॥ तबज्ञानभयो॥ जोदेखोमेंइंद्री
जीतकहाउंकेंयहकहाकांमकीयो॥ आपनेमनमेंदेख
केंअत्यंतचिंतातनकीयो॥ तामेंयहजताएजोमहादेव
जीकेमनमेंकछुकअहंकारभयो॥ जोमेंइंद्रीजीतहों
सोअभिमांननिवर्त्तर्थमहादेवकोंमोहकरिपाछेंभ
गवांनसाक्षातदर्सनदीए॥ महादेवजीकीबडाईकीए
जोतुंमइंद्रीजीतहीहो॥ तुमकोंमायाकरिमोहनांहीहें
यहमेंनेमोहकीयोहे॥ सोतुमकोंकछुबाधकनाहीहें
तातेंभगवदीयकेजोभगवदइछातेमोहादिकहोत
हे॥ सोश्रीठाकुरजीअनुग्रहार्थहीकरतहें मोहभएतें

अंतराय सिद्ध होइ। अपनी योग्यता न आवे। या प्रकार भ
क्तन कों मोह हे और ग्यांनी के साधन में जो माया संबंधी
मोह होत हे। ता करिके भगवद्प्राप्ति में प्रतिबंध होत हे। औ
र भक्तन कों जो भगवान इच्छा करिकें मोह करावत हें। सो
मोह रूप परम अनुग्रह जांननों। काहेते महादेवजी कों मो
ह कीये। पाछें तत्काल दर्सन देकें कृतार्थ ताके वचन कहे
सन मांन करे। माया कृत मोह होइ तो भगवद्दर्सन कहां
तातें भक्तन कों निश्चय माया कृत मोह नांही। सदां जीवन
मुक्ति रूप ही हे। या प्रकार मर्यादा पुष्टि भक्त कों श्रवणादि
क क्रम करिके भगवद्प्राप्ति हे। और केवल पुष्टि भक्त कों
तो ब्रजभक्त जो भाव सिद्ध श्री ठाकुरजी के संग लीला करत
हें। तिनके भाव सों भजन करनों। ब्रजभक्तन के भाव सों भा
वना करनी। यह पुष्टिमार्ग के संन्यास में गुरु गोपीजन
हें। ताके गोपीजनन के भाव जो हें तिनकी भावना करत भाव
सिद्ध होइ। तब यह [illegible] को दस इन्द्री देह प्रांण सब भगवद्स
रूप ही होइ जाइ। काहेतें या प्रकार सास्त्र में कहे हे। जो जा जीव
की जा वस्तु में जो लौकिक अलौकिक देवता मनुष्य जा में थो
री हू आसक्त होइ। ताही रूप वह जीव कों जाननों। जो भग
वान में आसक्त हे तो भगवद्रूप जाननें। सो पुष्टिमा
र्ग में क्रम नांही हे। जो यह साधन तें ऐतने जन्म में ऐतने
दिन में भगवान मिलेंगे। जब श्री ठाकुरजी कृपा करेंगे
तब फल सिद्ध हे। तातें केवल पुष्टिमारगीय भक्त कों
यही साधन यही फल जो ब्रजभक्तन के भाव सों भजन
करनों। उनही के भाव ताकी भावना सों लीला में प्रवेस हो
इ यही मुक्ति हे। या प्रकार मर्यादा मार्ग के संन्यास में औ
र पुष्टिमार्ग के संन्यास में तारतम्य हें। या प्रकार दस श्लोक

कोनिरूपन भयो ॥ १० ॥ तहां अब वादी आसंका करत हैं जो तुम
मर्यादामार्गीके संन्यासमें कठिन साधन करि भगवत्प्रा
प्ति वताए ॥ सो फल होउ तनकों भगवत्प्राप्तिरूप एक कहे
फलमें तो तारतम्य नांही ॥ तातें जो संन्यास लेइगो ॥ सो क
ठिन साधन हैं ॥ सो ई करेगो ॥ ताकरिकें भगवत्प्राप्ति होइ
गी ॥ तब तुम भक्तिमारगमें फल अधिक कोंन प्रकार
कहे याप्रकार कोई वादी प्रस्न करे ॥ तहां कहत हैं श्लोक
ताद्रसा सत्यलोकादौ तिष्ठंतेव न संशय ॥ बहिश्चेत्प्रक
टस्वात्मा वन्हिवच्च विसेहदि ॥ ११ ॥ याको अर्थ ॥ अब कहत
हैं जो मर्यादामार्गीयह संन्यासतें भक्तिमार्गको फल अ
धिक हैं ॥ कांहेतें मर्यादामार्गीय संन्याससों प्रथम तो ब्रह्म
लीन होइ ॥ ताहीको अधिकार हैं ॥ और ज्ञान विनां मोक्ष न
होइ ॥ सो मुचकुंदके प्रसंगमें साक्षी हैं ॥ और जो अपने श्रीमु
खसों कहे हैं ॥ जो इस देहसों नाक्षर ब्रह्मलीन होउगे ॥ तब मु
क्ति होइगी ॥ यह बात भोगपर्यंत है ॥ और ब्रह्मलीन होइकें
जा दिनांतें ज्ञानी पु[illegible]र न करे ॥ ता दिनतें ज्ञानके
साधनमें बेदरीतसों आचरन करे ॥ प्रथम तो यज्ञादि
कहांमें यह सब उत्तम क्रिया करे ॥ तामें कछू भूलै नांहीं
जो रंचक कछू अपराध परे ॥ यज्ञादिकमें पात्र जहांके
जहां मंत्र करिकें धरे कछू भूले तो प्रायश्चित करनो परे
सो अपराध जांनें तो प्रायश्चित्त करे ॥ जो अपराधकी
खबरि न परे तो यज्ञको फल नास होइ ॥ याप्रकार स
ब वेदके कर्म करे ॥ पाछें श्रवणादिक नवधा भक्ति है
सो सब करे नित्य नेमसों ॥ जो एक हू दिन प्रतिबंध हो
इ ॥ तो फलको नास होइ जाइ ॥ या भांति वेदके कर्म और
श्रवणादिक करत करत देहाध्यास जब सब मिटि जा

इइंद्रियाध्यास। तवप्रांणाध्यासमिटिबेकोंसाधनजोय
ह। सबँगोरभगवांनहीकोंदेखें। ब्रह्मरूपअपनेकोंक
ब्रह्मरूपजांनेंजोमेंहूंब्रह्महों। तातेंआतमांहे। सोब्रह्म
हें। ताकोंकछुदुःखहेनांही। याप्रकारअपनोंजीवहे। तांइ
कोंब्रह्मरूपजांनियहविचारकरतहे। जोब्रह्मकोंआगि
जरावेनांही। अस्त्रसस्त्रादिककेदेहकोंसंबंधनांही। कछु
हूदुखसुखनांही। याप्रकारअपनीआतमांकोंब्रह्मजां
नें। तबसगरेजगतकोंएकरसब्रह्मदेखें। काहूकेहोय
गुंनकीसंभावनांहूमनमेंनरहे। तबजांनेंजोअबमेंग
हकोंछोड्यो। अबमोकोंकछुप्रतिबंधमायाकेगुंनकोंन
लागेगो। सोघरछोडिसंन्यासलेकेंकहूसोंसंभाषनहू
नकरनों। याप्रकारतहांभ्रमणकरतरहे। तहांताईअखं
डसाधनकरें। ऐसेंसंन्यासपर्यंतसाधनजोआदि
अंतलोंनिर्वाहहोइ। तबकोंसत्यलोकजोब्रह्माकेलोकमें
जायकेंस्थितिहोइ। सोब्रह्माकोंजबमोक्षहोइ। तबब्रह्मा
केसंगयहजीवकोंमोक्षहोइ। तातेसंन्यासीसाधनक
रिकेंसत्यलोकवासीनिश्चयवाकोंहोइ। यामेंसंश
यनांही। याभांतिसोंज्ञांनीकीआतमांब्रह्महोयजातहें। जे
सेंअक्षरब्रह्मसगरेव्यापकहें। तेसेंसगरोजगतब्रह्म
रूपवहज्ञांनीकोंदीसतहें। औरआपेकोंहूंब्रह्मजांनत
हें। याप्रकारअपनेआतमाकोंआनंदमेंआपुहीमांनि
रहेतहें। परंतुऐसेसंन्यासीकोंपरमआतमांजोश्रीठा
कुरजीतिनकोंसुखनांहीमिलतहें। वहज्ञांनीकोंश्रीठा
कुरजीकेरसकोअनुभवनांहीहोतहे। प्रगटभगवांन
कोंदर्सननांही। अग्निमेंअग्निरूपहोइजातहें। याप्रका
रसंन्यासीकोंमुख्यफलजोश्रीठाकुरजीकोसरूपानंद

कोअनुभवसोनांहीहोतहे॥ तातेंकोईएकसंन्यासीकोंमो
क्षरूअतिकठिनहें॥ यहसंसारमेंअनेकदुसंगकरि
औरकदाचितसिद्धरूभई॥ तोमोक्षफलहोइजोश्रीकृष्ण
जीदुष्टजोराक्षसकंसादिकासिसुपालादिककोंदीनें
ताकीप्राप्तिहोइ॥ औरजोरसभक्तनकोंश्रीठाकुरजीदेत
हें॥ ताकीछींटरूरांनीकोंऔरसंन्यासीकोंसप्नरूमेंनां
हीं॥ सोअबभक्तिमार्गमेंश्रीठाकुरजीअपनेंभक्तनकों
जोप्रगटहोइ॥ साक्षातअनुभवकरावतहें॥ सोप्रकार
अववर्णनकरियतहे॥ भक्तिमार्गमेंजीवजवसरनआ
वतहेंतहापुष्टिमारग्गमेंभावात्मकजोअनुभव
ब्रजभक्तकरतहें॥ तिनकीभावनांकरीभावुकी॥ श्रीठाकु
रजीकोभजनकरतहें॥ तामेंमुख्यभजनमेंभावराखत
हें॥ श्रीठाकुरजीव्रजभक्तनकेआधीनप्रकारसोंजोसेवा
मेंसामग्रीवस्त्रादिकसमर्पतहें॥ सोव्रजभक्तनकेभाव
सोंव्रजभक्तहीभोगधरतहें॥ तासेंआपनोंपुरुषार्थनां
हीमांनें॥ याप्रकार[illegible]भजनकरतकरतश्रीठा
कुरजीमेंप्रेमउत्पन्नहोतहे॥ तवश्रीठाकुरजीबिनांर
ह्योनांहीजात॥ साक्षातमिलवेकोविरहप्रगटहोतहे॥ जो
मोकोंकवदर्सनादिकस्पर्सादिककोंसुखहोइगो॥ याभां
तिकलेसभएतेश्रीठाकुरजीअनुभवकछूकछूजताव
तहें॥ सोज्योंज्योंअनुभवहोतहे॥ त्योंत्योंआसेतमिलवेकी
आरत्तिवढतहें॥ सोविरहकरतकरतदेहइंद्रीसब
तद्रूपताकोंप्राप्तहोतहें॥ तवश्रीठाकुरजीप्रगटहोंइ
सरूपानंदकोअनुभवस्पर्सादिककोंसुखदेतहें॥ ह
अलौकिकइंद्रियकोंदुष्टसुभावहेकोधर्मसवभस्म
होइकेंअलोकिकसवगेरभगवद्बुद्धिहोतहें॥ सोसर्वा

सभावकहियतहे।जाकोंसोभगवांनकेसेंप्रगटहोतहें॥
जेसेंकाष्टकेमध्यनतेंबाहिरअग्निप्रगटहोयकेंकाष्टा
दिककोंदाहकरिकें।सबकोंअग्निरूपकरे।तेसेंभक्तनके
विरहकेआधिक्यतेंहृदयमेंजोभगवांनहें।सोप्रगटहो
इदर्सनदेतहे।लोकिककाष्टवतदेहइंद्रीहें।ताकोंभस्म
करिकेंअलोकिकअपनेसमांनकरें।याप्रकारभक्तिमा
र्गमेंश्रीठाकुरजीसाक्षात्प्रगटहोइ।रसदांनकरतहें॥
सोरसज्ञांनीकोंमर्यादामार्गीयसंन्यासीकोंसप्नमेंहूदु
र्लभनांहीहें।तातेंज्ञानीकीआत्मांब्रह्महोइजातहे।सोअग्नि
मेंअग्निमिलिजातहे।जाकोंवेदमेंजोतिसरूपनाराइ
नकहेतहें।सोभगवांनकीजोतिमेंलीनहोइजातहें।ता
तेंश्रीठाकुरजीकोसरूपनांहींदेखिसकतनांही।तातें
सरूपानंदकोंअनुभवज्ञांनीकोंनांही।भगवांनकोंतेज
मेंसूर्यहें।नारांयनरूपजेसेंदेखिसोसूर्यके।सोनारां
यनकोंकोईजानतदेखतनांहीतोनारांयनकोपरस
कहांतेहोइ।औरजोसूर्यकोंब्रतादिककरिकेंसूर्यनारां
यणकोउपासनाकरतहें।सोसूर्यकेलोकमेंजाइ।दृष्टी
सहेतनारांयनकीचतुर्भुजसरूपकोदर्सनपावतहें॥
औरजगतकोंनारांयणकोदर्सनस्पर्सनांही।जगतमें
सूर्यकोप्रकासधूपहे।ताहीकोपर्सहें।तेज्ञानीकोंसांख्ययो
गकेसाधनवारेकोंतथासंन्यासीकोंभगवांनकोंतेजरू
पजोअक्षरब्रह्मसोसर्वत्रव्यापकहे।ताहीकोसंबंधते
कालादिकनकोभयनिवर्तहोतहे।मायाकेगुनबाधक
नांहीहोतहें।उहजीवकोनासहोतहे।सोजीवकोजबनास
भया।तबभगवांनकेसरूपकोअनुभवकेसेंहोइ।तातेंभ
क्तिमार्गसबतेंश्रेष्टहे।साधनमेंहूसुगमहें।औरफलश्रा

त्तिसर्वोपर है॥ भक्तिमार्गको फलहू स्वरूप भक्तिमार्ग
कोसाधनरू फलरूप है॥ तातें जो भक्तिमार्गमें प्रवर्त्त हो
त है॥ सो भगवानके समान ही जाननो॥ या प्रकार ऐकाद
स श्लोकको निरूपन भयो॥ ११॥ तहां अववादी अप्रसंकाक
रत हैं॥ जो यह लौकिक गृहादिकको आसक्त मोह दुख
सुखदेनते जीवको छूटै॥ यह महा कठिन है॥ गृहादिक कु
टंवादिकको मोह सास्त्रमें इनको त्याग कीऐतें छूटत है सो
आगें बड़े बड़े राजा भगवदीय ज्ञानी गृहरूप अंधकूप
कोंछोडिकें जब आरन्य जो वन तिनको सेवन करे हैं तब
मोहादिककी वेडी छूटी॥ सो प्रकार तो तुमनें नाहीं कहे तुम
तो ऐसें कहे॥ जो गृहमें रहिकें कुटंब आदि लौकिकासक्त
सब छूटे॥ जब भगवद्धर्मद्वढ होय॥ तबही घर छोडै
सो घरमें रहिकें कुटंबमें तो दुःख होय कोन प्रकार छू
टे पंकादिक देहमें लागे होय॥ सो पानीसों छोडाईये तो
छूटे॥ और पंक ही लगाई ओसों लोगे॥ सो कोन प्रका
र छूटे॥ तैसें गृह अलौकिक भावसों प्रगट करत
तामें कुटंबादिक प्रकारसों मोह को बंधन करत है॥
तातें गृहमें कुटंबादि हादिक दुखसों यह जीव कोन
प्रकार छूटे॥ या प्रकार कोई वादी प्रश्न करे॥ तहां कहत हैं
श्लोक॥ तदैव सकलो बंधो नाश मे ति नचान्यथा॥ गुनाश्ल
श्लोक॥ संगराहित्याजीवनार्थे भवेतिहि॥ १२॥ याको अर्थ॥ अबक
हेत हैं जो वेद आसय यही है जो लौकिक गृहादिक आस
लछोडि भगवद्भजन यही कर्तव्य है॥ यही सिद्धांत वेद
कोंतात्पर्य है॥ परंतु भगवद्भजनमें जीव प्रवर्तकोंन प्र
कार सो होइ॥ सबनको बिषयासक्त है॥ ताको लिऐ अनेक
प्रकारके वेदमार्गके कर्म होम दान तीर्थ तर्पन श्राद्ध

स॰टी॰ इत्यादिकदोषयहकाहिकेंकेवलपापासक्तजीवहतेतिन
१९ कोंवेदकेधर्ममेंतोप्रवर्त्तकीए॥वर्णाश्रमकेधर्मसबन्या
रेन्यारेकिए॥याप्रकारसोंधर्मादिककीसिद्धाकरिकेंपाछें
नवधाभक्तिज्ञानमारगकेधर्मसंन्यासकेधर्मकहेतिन
केफलकोंमहातमकहे॥काहेतेंमहातमबिनांसुनेबिनां
जांनेयाकोंमनभगवद्धर्ममेंलागेनांही॥सोभगवद
धर्ममेंजीवप्रवर्त्तभए॥तबकहेभगवद्धर्मनिस्काम
होइकेंकरेतोआगेंमोक्षहोइनांही॥तोलौकिकहीसिद्ध
हेयाप्रकारनिस्कामहोइकेंभगवद्धर्मकरेतबश्रीठा
कुरजीमेंस्नेहआवे॥तबलोकिकमेंवैराग्यसिद्धहोइसोया
प्रकारकोभावजोप्रभूमेंप्रेमसोलौकिकमेंपूर्णवैरा
ग्य॥तबगृहस्थाश्रमकोंछोडे॥याप्रकारकोधर्मरूढयारू
ढनभयोहोइ॥तहांतांईआपनेघरकोंनछोडे॥जोकदाचि
तछोडेतोउभयभ्रष्टहोइ॥औरघरमेंरहेबिनाकोईआंम
केआश्रयबिनाभगवद्धर्मबनिआवेंनांही॥तातेंअलौ
किककोआश्रयकरिकेंजबजांनेंजोअलौकिकआश्रयभ
यो॥तबलौकिककोत्यागकरे॥तहांतांईनकरे॥सोप्रकार
कहेतहें॥प्रथमतोजीवअज्ञानकरिकेंलौकिकासक्तिहोइ
रह्योहे॥सोप्रथमतोपुष्टिमारगमेंसरणआवे॥सोजब
ब्रह्मसंबंधभयो॥तबभगवांनमेंस्त्रीपुत्रघरकुटंब
देहइंद्रीप्रांणअंतकरणसबसमर्पनभयो॥याप्रका
रसोंतोमनकरिकेंलौकिकसंबंधसबकुटंबातेंछूटिकें
अलौकिकसंबंधभयो॥सोमनकरिकेंछूट्यो॥तासोंवेगि
फलप्राप्तिनहोइ॥कोईकालपायकेंहोइ॥ताकेलिएकर्म
करिकेंलौकिकसंबंधछुडावनों॥सोभगवद्सेवाबिना
नछूटे॥तातेपुष्टिमार्गमेंभगवद्सेवामुख्यहेसोजहांतां

ईभगवद्सेवानकरी॥ तहांताईंक्लेसबनसोंलौकिकक
रतकरतमनकोंसंबंधकूसिथलहोइ॥ ओरजोवचन
कमसोंभगवद्सेवाकरे॥ ताकोमनकूंभगवद्परहो
इजाइ तातेंसिद्धांतमुक्तावलीमेंकहेहेंजोकृस्नसेवास
दाकार्यामानसीसापरामता॥ इतिवचनात् याभावसों
सबजांननों॥ काहेतेजहांब्रह्मसंबंधभयो॥ तहांभगवद
सेवाकरें॥ सोप्रथमदिंनरात्रिलौकिकवोलतो॥ सोअव
भगवद्सेवाअर्थकूबोलनोंपरे॥ तथाकीर्त्तनजपया
गादिककरिकूवानिभगवद्धर्ममेंलगे॥ ओरसेवातोदे
हतेहोइसोदेहकरिकेंसबप्रातकालमंगलातेलेकेंरा
जभोगताईं उत्थापनतेलेकेंसेनभोगपर्यंतसबसे
वाकरे॥ जेसेंगोपीजनतनमनधनकरिकेंसेवाकीये
तेसेंहीइत्यादिकयथासत्जीवभगवांनमेंविनयोग
करें तबसेवाहोइ॥ ओरजोसेवाकरे तोसेवासिद्धहोइ
तबमांनसीजोमनकेरहे॥ सोउसिद्धहोइ॥ याप्रकारलौ
किककुटंबमेंतेंमनन्यारोहोइ॥ सोअलौकिकजोभगव
द्सेवाकोआश्रयहोइ॥ तोएकादसइंद्रियकोंभगवान
मेंविनयोगहोइ॥ तबइंद्रीनकेदेहकेमनकेजनमजन
मतेंदुष्टसुभावहे॥ तातेंजाप्रकारश्रीठाकुरजीनेंब्रज
भक्तनकेघरमांखनदही॥ दूधइत्यादिककीचोरीकरी
आपुअंगीकारकरिकेंब्रजभक्तनकीएकादसइंद्रीअ
पनेसरूपमेंलीनकरी॥ ताहीप्रकारश्रीआचार्यजीभगवद्से
वाकरायवेस्नबकीएकादसइंद्रीभगवद्विनियोगकरा
य॥ तातेंप्रथमकुटंबादिककोंछोड़ायवेकेअर्थ॥ हरिसेवा
संयोगात्मकहे काहेतेंप्रथमतोजीवकीप्राप्तिभगवान
मेंहेनांही तातेंलौकिकासक्तिजीवहोइरह्योहे॥ सोब्रह्मसं

बंधकरायवें॥पाछें भगवद्सेवाकरिदेहइंद्रीमनसबभग
वांनमेंविनयोगभयो॥तबलोकिकासक्तिसबछूटिजाइ
सोजबभगवांनकोमहातमजांनें॥भगवांनमेंप्रीतिहो
इ॥तबलोकिकासक्तिछूटे॥जहांताईभगवांनमेंस्नेहन
होइ॥तहांताईलौकिकासक्तियाकेगुंनबाधककरें॥ता
तेंलोकिकहीमेंरहिकेंभगवद्धर्मकरिकेंजबभगवां
नमेंपूर्णस्नेहहोइ॥लौकिकमेंपूरनवैराग्यहोइ॥तब
जोगृहमेंकुटंबकेलोगसेवामेंप्रतिबंधकरतहोंइ॥
तोत्यागकरनों॥जोअनकूलहोइतोमिलकेंभगवदसे
वाकरनी॥ऐसेंसेवाकरतकरतदसमीभक्तिजबहृ
दयमेंतापप्रगटहोइ॥कबहूंभगवांनअनुभवज
नावें॥तबसुखहोइ॥कबहूनजनावें॥तबरुदनविक
लताऐसीदिसाहोइ॥तबग्रहादिककोत्यागकरनों॥त
बमायाकेगुनराजसतांमससात्वकतीनोंसोंरहित
होइकेंजाप्रकारमनकरिकेंगोपीजनस्वपनेअंतक
रनमेंसगरीलीलाकोअनुभवकरतहें॥ताहीप्रकार
मनमेंमानसीसेवाभावनामेंभीतरअंतकरनमेंस
बइंद्रियनकोंविनयोगहोइ॥तबलोकिकवैदिककी
स्फुर्तिकछुनरहे॥तबग्रहादिककोत्यागकरनों॥याप्रका
रभक्तिमार्गमेंग्रहादिकमेंरहिकेंसर्वधर्मनकोआचर
नकरेतोपाछेंकृतार्थहोइ॥औरजोभगवांनमेंस्नेहन
भयोहोइ॥इंद्रीमनसबविषयादिकमेंलौकिकासक्तिहै
॥औरग्रहादिककोत्यागकरे॥सोजहांजायतहांभ्रष्टहीहो
इ॥यहनिश्चयहोइ॥ताकेलिएगृहादिकमेंरहिकेंभगव
द्धर्मकोआचरनकरे॥यहसिद्धांतनिश्चयकीयो॥तहां
कोईबादीप्रसंकाकरे॥जोध्रुवजीतोकछूघरमेंआचरनना

हीकरे।।यहसिद्धांतनिश्चयकीयो।।तहांकोईवादीअसंकाकरे
ओरघरछोड़िवनमेंतपस्याकीयो।।तिनकोंभगवांनकेसें
मिले।।याप्रकारकोईवादीप्रस्नकरे।।तहांकहेतहेंजोध्रु
वजीजन्मजन्मकेविषईलोकिकासक्तिनांहीहे।।पूर्वजन
ममेंहूंभगवद्भक्तहे।।सोप्रगटभए।।उत्तानपातराजा
केघरआए।।सोदूसरीमातानेंरंचकज्ञांनदीयो।।जोश्रीठा
कुरजीकेभजनविनांकछूफलसिद्धनहोइ।।तहांलोकि
कराजादिकसिंघासनपरबेठे।।सोमातानेंतोपरिहाससों
ईर्षाकरिकेंकहीसोध्रुवजीकोभगवांनमेंप्रेमदृढभयो
सोतत्कालजाइकोंटांनकोंटिप्रतिबंधआए।।परंतुपू
र्णबैराग्यध्रुवजीकेह्रदयमेंरह्यो।।यातेंलौकिककछूबा
धकनभयो।।भगवांनकोंदर्सनभयो।।सोएसोबेराग्य
यहकलिकालमेंजीवनकोंहोनोंदुर्लभहे।।औरध्रुवजी
कीनांईसाधनहूंयहकलिकेजीवनकोंअत्यंतदुर्लभ
हे।।वेगिसिद्धहोइनांहीं।।तातेंजबताईपूर्णवैराग्यनहोइ
।।तहांताईलौकिकवेदिकछोड़ेनांही।।तातेंजबमायाके
।।तीनोंगुनछूटे।।तबजीवनकोंफलसिद्धहोइ।।याप्रकार
द्वादसश्लोककोनिरूपनभयो।।१२।।तहांवादीअसंकाक
रें।।जोघरमेंरहिकेंभगवद्धर्मकोंआचरनकरेंतोघ
रमेंतोअनेकप्रतिबंधहें।।काहेतेंसास्त्रमेंयहकहेहें।।जो
रंचकहूएकक्षनहूंदुसंगमिलेतोताकेसंबंधतेंजन
मताईसाधनकीयोहोइताकोनासहोइजाइ।।तोगृह
स्थाश्रममेंरहिकेंव्योपारवनजादिककरिकेंलौकिका
सक्तहोइकेसंबंधतेंभगवद्धर्मकेसेंरहे।।यहतोलोकि
ककोंप्रतिबंधतथाअलौकिकजोप्रतिबंधयाप्रकारहोइ।।
जोकदाचितभगवद्धर्मकोंआचार्ययहकरेतो।।तहांभ

गवद्भक्तको संग लौकिकमें कहां मिले ॥ लौकिक राजसी कै
होतो अनेक मायावादी पाखंडी कहा चित कोई लोभार्थ आवे
तिनको संग होइ ॥ तो मायावादी महादेव हाकों ईस्वर कारिकें
निरूपन कीये हें ॥ यह मोक्तसास्त्र के बचनकरि भगवद्ध
र्ममें केसें सिद्ध होइ ॥ याप्रकार कोई वादी संका करे ॥ त
हां कहेत हें ॥ श्लोक ॥ भगवान फलरूपत्वात्र बाधक ईस
ते ॥ स्वास्थ्यवाक्येन कर्त्तव्यं दयालुर्न विरुध्यते ॥ १३ ॥ याको
अर्थ ॥ अब कहेत हें जो पुष्टिमार्गमें श्रीआचार्यजी महाप्र
भुद्वारा ब्रह्मसंबंध भयो है ॥ ऐसे जे कृपापात्र वैस्नव हे ॥
सो लौकिकमें अलौकिकमें फलरूप एक साक्षात्सद्
गुनसंपूर्ण श्रीकृष्ण हें ॥ और दूसरो पदार्थ इनतें श्रेष्ठ
हे नांही ॥ तिनकों लौकिक अलौकिकमें नासें ॥ वैरभपादिक
दोषरूप हें मायाकेतीनगुनको कछू बाधक करिवेकों साम
र्थ नांही ॥ काहेते पुष्टिमार्गमें मूल मारगको सिद्धांत यही
हे ॥ जो एक फलरूप भगवान हें ॥ और फल ही नांही हें ॥ अ
न्यवस्तुको फल मानें ॥ सोई मिथ्यावादी यह सिद्धांत हृ
दयमें राखिकें जो लौकिक वैदिक कार्य कछू करत हें ॥ ताकों
लौकिक वैदिक दु:संग कछू बाधक नांही होत हें ॥ तहां वा
दी कहे ॥ जो फलरूप भगवानके सो ॥ ऐसे वैस्नवकों लौकि
क वैदिक कछू बाधक नांही होत हे ॥ लौकिकमें इनके र
हिवेको तात्पर्य कहा ॥ गृहादिकमें रहिवेकों आवस्यक क
हा कार्य हे ॥ सब छोडिकें फलरूप भगवानकों जो नि अन
न्यसें भगवद्भजन करे ॥ तो इनके भजनमें कोई लौकि
क अंतराय न होइ ॥ या भांति कोई प्रस्न करे ॥ तहां कहेत हें ॥
जो घरमें रहिवेको दोय भांतिको अभिप्राय हे ॥ एक तो
गृहादिक विना भगवद्सेवा न होइ आवे ॥ काहेते प्रथम

सरणसमर्पनतेंश्रीआचार्यजीकीकृपातेंयहतो॥हृद
यमेंज्ञांनउत्पन्नभयो जोमुख्यएकफलरूपभगवांन
हैं॥सोयहज्ञांनफलरूपकबहोइ॥जबभगवद्सेवामें
तत्परहोइ॥काहेतेंफलरूपभगवांनजांन्यों॥परंतु
भगवांनकीसेवातोजबनबनिआई॥तवआगेंभग
वद्प्राप्तिक्तनहोइ॥तवफलकहासिद्धभयो॥ओरभग
वांनजांन्यों॥परंतुभगवांनकीसेवातोजबनबनिआ
ई॥तबआगेंभगवद्प्राप्तिक्तनहोइ॥तबफलकहासिद्ध
भयो॥ओरभगवांनजांन्यों॥ओरकोईवनमेंनिकरिग
यो॥तथाकोईतीर्थादिकनमेंगयो॥सोफलरूपभग
वांनहैं॥यहज्ञांनभयोहे॥परिइंद्रीमनदेहकोंभोगग्य
हवूद्योनाहीं॥सोबाहरकलिकालकरिकेंभक्तिमार्गी
यन्अपनेसुमार्गीयवेसबमिलनेंतोकठिनहैं॥अने
कदुसंगतेंकोईअन्यमार्गीयकेसंगतेंपुष्टिमारगी
यकीअनन्यताजोमनतेहे॥तथाकोईविषयादिककों
दुसंगमिलेतोतहांभक्तिहोइजाइ॥तबभगवानफ
लरूपजांन्योंहे॥सोउभावजातरहे॥ताकेलिएंनिश्चेंय
हिधर्महें॥जोब्रह्मसंबंधकरिप्रथमसरूपपधरायति
नकीपुष्टिमार्गकीरीतिसोंसेवाकरे॥सोमहाप्रसादीवस्तु
सोंइंद्रियादिकनकोंदेहकोपोषनहोइ॥तबअनेकजन
मतेंइंद्रीमनभगवांनतेंबहिर्मुखभईहती॥सोभगवां
नकेसनमुखहोइ॥सोज्योंज्योंइंद्रीमनभगवांनकेस
नमुखहोइ॥त्योंत्योंभगवद्धर्मविषेंरागबढे॥सोयाप्र
कारलोकिकासक्तिसबछूटिजाइ॥भगवद्भावकोप्र
वेसहोइ॥ओरभगवदीसुमार्गीयकोमिलापक्तहोइ॥
सोभगवद्सेवाबिनांमननकीलोकिकमेंतथाइंद्रिया

दिकनकोंविषयसोनष्ट है। औरजोविषयवासनाकोअं
कुरइंद्रीमनमेंहोइ। औरवहओघरकोंछोडेतोखांन
पानविनांतोरह्योनजाइ। औरविषयसहेजमेंकूंमिले
नाहीं। तवमनमेंपश्चातापकरे। जोमेंकहांतेघरछोड्यो।
याप्रकारदुखपायकेंअनेकप्रकारकोउद्यमविष
यकेअर्थकरे। सोदुसंगमेंलिप्तहोइजाइ। तहांअसम
र्पितखायकेंऔरइंद्रीमनलौकिकासक्तहोइ। याप्रका
रभ्रष्टहोइजाइ। ताकेलिएप्रथमदसामेंगृहमेंरहिकें
हीउसमयएकसमयतथातीनकालजेसोबनिआवे
तितनोंहीकरे। एककालंवाद्विकालंवात्रिकालंवा। याप्र
कारकेतीनोंवचनहें। सोजितनोंजाकोंसामर्थ्यहोइ। ति
तनोंहीसेवातेलौकिकाहलिकोआसुरावेसहीनिवर्तहो
तहे। तातेगृहादिककेरहिकेंप्रथमभगवद्धर्मसेवा
करे। सोआगेंफलकोप्राप्तहोइ। सोपुष्टिमार्गकोफल
प्राप्तभयोजानिएतोअहेंनिसभगवांनकेमिलि
वेकोतापरहे। औरजनादिककेउपदेसतेस्वास्थ्यमन
होइ। तवभगवांनकृपाकरें। भावसिद्धहोइ। जेसेंगोपी
जननेंश्रीठाकुरजीमेंसगरेभावकरिकेंभजनकीये। मा
तापितामित्रपतिइत्यादिकसबसंबंधकप्राप्तरूपलौ
किकअलौकिकमेंएकभगवांनहीकोंजानें। तातेंजबश्री
ठाकुरजीमथुरापधारे। तबअतिविरहकरिकेंतप्तभई
तवश्रीठाकुरजीस्वास्थ्यकेवचनउद्धवजीद्वाराकहिप
ठवाए। सोउद्धवजीआयकेंव्रजभक्तनकोंज्ञानउपदेस
कीए। जोतुमदुखकाहेकोंकरतहो। भगवांनतोतिहा
रेहृदयमेंसर्वठौरभगवांनव्यापकहें। तातेंदुखतोंना
कोंकरिएसोपासनहोइ। सोभगवांनतोसबठोररहेहें

औरभक्तनकोयहलक्षनहें॥जोश्रीठाकुरजीकोभजनक
रनों॥सोभगवानकेगुनबरननकरिवोकरनों भगवा
नमेंतोदोषबुद्धिनराखनी॥औरतिहारेप्राणप्रियश्रीठा
कुरजीहें श्रीठाकुरजीकोंतुमप्राणप्रियहो॥तातेंतुमश्री
ठाकुरजीमेंदोषबुद्धिमतिराखो॥सर्वगोरभगवान
कोंजानिकेंप्रसन्नहोइकेंउनकोस्मरणकरो॥इत्यादि
कभक्तज्ञानसहितउद्धवजीनेंव्रजभक्तनसोंकहे॥सोसुं
निकेंऔरहूंविरहकरिकेंतत्पभएसोकहे॥हमतोंश्री
ठाकुरजीकोंप्राणप्रियजानतहें॥परंतुहमकोंकबजा
नतहें जोहमारेऊपरस्नेहहोतोतोहमकोंत्यागकरि
केंमथुराकाहेकोंजाते॥तातेहमकोंतोसवप्रगटआइ
केंदर्सनदेंइगे॥तबहीसुख॥औरप्रकारसुखनोही
याप्रकारउद्धवजीनेंबहुतभांतिज्ञानकोउपदेस
दीयो॥सोव्रजभक्तनकोंस्वास्थ्यचितनभयो॥यहपुष्टिमा
र्गीयभक्तनकोलक्षन॥औरउद्धवजीकोंभगवाननेंज्ञा
नउपदेसकरिवेंकोंआमपठाए॥सोउद्धवजीज्ञा
नकरिकेंस्वास्थ्यताकोंपाए॥तातेंश्रीठाकुरजीतेवियोग
भयो॥यहमर्यादाभक्तकीरीतिहे॥औरव्रजभक्तनकोंरा
सपंचाध्याईमेंबुलायकेंश्रीठाकुरजीमर्यादाकेंधर्मकों
उपदेसकीने॥जोगृहजीवसोसुनिकेंव्रजभक्तनकोंअत्यं
ततापभयो॥सोश्रीठाकुरजीकोंप्रतिउत्तरदेयहकहेजो
अबहमकोंरसदानजोनकरोगेतोप्राणहमारेछूटेंगेया
प्रकारतापहीभयो॥ज्ञानकरिकेंभगवानकोंछोडिकेंअ
न्यउपायनकीये॥तेसेंहीजोभक्तिपुष्टिमार्गीयहोहें॥
तिनकोंस्वास्थ्यमननरहे॥औरजोस्थिरमनराखिकेंप्र
तिवंधकरे औरजो
संन्नरहे॥तोमायाकोदोषआयकेंप्रतिवंधकरे औरजो

स्थिरमनराखिकें प्रसंन्न रहे।। तोमायाकोदोषआयकें
प्रतिबंधकरें।। ओरजो बिरहकरिकेंसव इंद्रीभगवांनमें
तत्परभई।। तवबाधककोंकरिसकें।। तामेंजो प्रतिबंधआ
वे।। सोभगवांन दूरिकरिकें भगवद्भावसोंईकरे।। काहे
तेदयाल हें।। भक्तनकोंभावकेपोषककर्ताभावकेनास
कर्त्तानांहीहें।। भगवांनखटगुनसंपूर्ण हें।। सर्बसांमर्थ्य
युक्त हे।। सोजगतकीरक्षातो ब्रह्मरूपहें।। सर्वसांमर्थ्ययु
क्तहें।। सोजगतकीरक्षातो ब्रह्मरूपहोइकेंकरतहें।। ओर
भक्तनकेभाव विघ्नकरनबिखेंसर्वप्रकारकीरक्षाआ
पुहीकरतहें।। ऐसेदयालहें।। ताते भक्तग्रहादिकमेंरहि
कें भगवद्सेवामेंजो तत्पर होतहें।। तिनकेप्रतिबंध
केदूरिकर्त्ताभगवांनहें।। सबलौकिक वैदिकप्रतिबंध
होइ हीहोइ।। भावदृढ सोई भगवांनकरतहें तातेंभक्ति
मार्गसर्वोपरि हे।। याप्रकारत्रयोदसश्लोकको भावनि
रूपनभयो।। १३।। तहां अबवादीआसंकाकरतहें।। तहांक
हेतहें श्लोक।। दुर्लभोयंपरित्यागो प्रेम्णा सिध्यति नान्य
था।। ज्ञानमार्गेतिसंन्यासोद्विविधोपि विचारित।। १४।। याको
अर्थ।। अवकहेतहेंजोभक्तिमार्गकोसंन्याससबतेंश्रेष्ठ
हे।। भक्तिमार्गकोप्रेमज्ञानीकोंदुर्लभहे।। सोकहेतहें।। जो
त्यागतोब्रजभक्तनकोंजोअपनेअपनेग्रहकोकारज
करतहती।। सोश्रीठाकुरजीकीमुरलीकोसब्दसुंनतही
सबलौकिकदेहसंबंधीकुटंवघरकोंछोडिकेंततका
लरात्रिसमयस्त्रीजनहोइकेंबनमेंश्रीठाकुरजीकेआ
र्येपधारे।। सोयहपुष्टभक्तबिनांओरकोसांमर्थ्यनाहीसो
श्रीठाकुरजीकेपासगई।। पाछेंश्रीठाकुरजीअंतरध्यांन
भए।। तबअनेकउपायकरे।। परंतुअपनेघरनआए

श्रीठाकुरजीके मिलवेकेलिये॥ यहही दृढविस्वास विचारअ
पनेमनमें कियो जो श्रीठाकुरजी प्रगट होयकें हमारेम
नोरथ पूरन करेंगे॥ तो प्राण राखेंगे नांही तो प्राणनि
श्चय त्याग करनों॥ ऐसो दृढ आग्रह भगवानमें स्नेह
होइ तो बनेनांही॥ तो नबनेंकाहेतें॥ औरहू भक्त ब्रजमें व
होतहें॥ गोपसखा नंदयसोदाजी इत्यादिकको प्रेम तो
सही॥ परंतु गोपीजनके समान प्रेम नांही॥ काहेतें त्रण
बर्त्तआयो॥ सो जसोदाजी अपनी गोदतें श्रीठाकुरजीकों
भुमिपर पधरायकें कछुग्रहके कारज करनकों गई
यह स्नेहमें न्यूनता॥ और श्रीठाकुरजी सारिखें॥ पुत्रपाय
कें गोचारनलीलाकों नंदरायजसोदा घररहेते॥ श्रीठा
कुरजीकों बनमें पठावतहें॥ और ब्रजभक्त बनकी लीला
सुधकरिकरिकें अत्यंत खेद पावतहें॥ तातें यसोदाजीके
प्रेमतें और ब्रजभक्तनके प्रेममें तनोंतारतम्यहें
जेसें कोई लौकिक का[illegible] स्त्रीहोइ॥ ताकों वृद्धसमें पुत्र
प्राप्त होइ॥ सो वहपुत्र परमहास्नेह होइ॥ सो रात्रिदिन
आपने पास ही राखें॥ पुत्रकों लालनपालन करें कबहू
पुत्रकों द्वारकेवाहिर ननिकारे जो कहूं नजरि नांमको
ईकी द्रष्टि लागेगी॥ या प्रकार बरस दसवाहरको पुत्र
भयो॥ परंतु मातापिताके स्नेहकरि कबहू द्वार बाहिर
ननिकस्यो॥ सो एकदिन ऐसो भयो॥ जो दिनकों मातापिता
कों नींद आई सोइगई॥ तब वह पुत्र छांनेसों घरकेवा
हिर मारगमें आयो॥ तहां एक गोपकी वेटी सो यहलरि
काकों देखकें मोहितभई॥ सो दोरिकें उपरें नाव हवाल
ककों पकर्‍यो॥ सो वह वालक तो कबहू बाहरनिकस्योनां
ही॥ सो डरिकें जोरावरीउ परें नाछोजायकें तहांतेघर

कोंचल्यो॥ सोउपरनांछ्योउ तहीवहस्त्रीकेंऐसोविरहभयो
सोवहतत्कालगोपकीवेटीनेंदेहकोंछोडिदीनी॥ ऐतनें
मेवहमातापिताआगे॥ तबपुत्रकोंघरमेंनदेखे॥ तब
प्रांननिकसिगऐ॥ औरवहगोपकीबेटीकोंरंचकदे
खतमात्रहीस्नेहकियो॥ सोप्रांणतत्कालछोडिदीये॥ ते
सेंहीव्रजभक्तकेप्रेममें औरनंदजसोदाजीकेप्रेममेंता
रतम्यजांननों॥ तातेंयहलौकिकवैदिककोत्यागअत्यं
तदुर्ल्लभहे॥ जोश्रीठाकुरजीमेंपूर्णप्रेमहोइ॥ तबहां
बनिआवे॥ नांहीतोसर्बथासिद्धनहोइ॥ जेसेंगोपीज
नश्रीठाकुरजीमेंपूर्णप्रेमकरिलौकिकवैदिकत्याग
किऐ॥ यहभक्तिमारगकोसंन्यासतामेंकेवलसरूपा
नंदकेरसकोअनुभव॥ औरवासनांकीगंधकोलेस
हूनांही॥ ऐसोदिसावैलौकिकवैदिकत्यागउचितहीहे
अन्यथातोभ्रष्टहीहोवे॥ याप्रकारभक्तिमारगकोसं
न्यांसकहिकेंअबज्ञानमार्गकोसंन्यासकहेतहें॥ सोज्ञां
नमार्गमेंतोयसंतिनिकोविचारहे॥ सोआगेंश्लोकमेंकहें
गें॥ याप्रकारचतुर्दसश्लोककोनिरूपनभयो॥ १४॥ अब
औरहूकहेतहें॥ श्लोक॥ ज्ञानार्थमुत्तरार्थंचसिद्धिर्जन्मश
तैपरं॥ ज्ञानेचसाधनापेक्षंयज्ञादिश्रवणान्मतं १५ या
कोअर्थ॥ अबकहेतहेंजोभक्तिमारगकेसंन्यासमेंसा
धनकीअपेक्षानांहीहें॥ जोइतनेदिनफलांनोंसाधन
करे॥ तासोंफलहोइ॥ जबप्रभुकृपाकरें तबसरूपा
नंदकोअनुभवहोइ॥ औरज्ञांनमारगमेंज्ञांनकोंदू
सरोअंगसाधनहें॥ जोसाधनजाप्रकारवेदमेंकहे
हें ताहीप्रकारकरेंजायतोआगेंऐककोंज्ञानसिद्धन
होइ सतजनमतांई॥ दिनदिनसाधकहोइ॥ मनक्रम

वचनकरितवज्ञानसिद्धहोइ॥ जोएकहूजनममेंसाध
नकीएकदिनएकक्षणहूजोमोहमदकोंमइंद्रीकाहू
लौकिकमेंमनजायतोसगरोज्ञाननासहोइजाइ। तातें
ज्ञानमार्गअत्यंतकठिनहें॥ औरज्ञानमारगजोकोईकों
सतजन्ममेंसिद्धहोइ॥ तोसतलोकजोब्रह्माकेलोकमें
जाइ॥ सोजहांतांईब्रह्माकीआयसहोइ॥ तहांतांईब्रह्म
लोकमेंस्थितरहे॥ सोजबब्रह्मामरे। तबब्रह्मामेंलीनहो
इकेंब्रह्मद्वाराअक्षरब्रह्ममेंलीनहोइ॥ ऐसेज्ञानीकों
भक्तिरसकेकनिकाकोलेसहूनांही॥ तातेंकेवलश्रमही
जाननें॥ जोश्रीठाकुरजीकेस्वरूपानंदकोअनुभवनां
हीहोतकहा॥ औरज्ञानीकोंप्रथमसाधनहें॥ सोश्रवणा
दिकमेंनवधाकोंआचरणकरे॥ जोश्रवणादिकमेंन
वधाअवहीसिद्धनहोतहोइ लौकिकमेंमनबहोतहो
इतोप्रथमयज्ञादिककरे॥ तातेंअनेकप्रकारकेकर्म
कोएतेकछूकपापदूरहोंय॥ सोयज्ञादिककरतकरत
जबसबद्रव्यहोरचुकें॥ तबयज्ञादिकतोबनेंनांही। त
बतीर्थादिकनमेंपर्यटनकरे। सोजहांभगवद्स्थल
होइतहांजाइ औरजोलौकिककोईदेवताताकेआश्र ३
यनहोइ॥ ऐसेंफिरे॥ सोतीर्थनकेगएतेकछूकपापादि
कदूरिहोइ॥ तबश्रवणादिकनवधामेंमनलागे॥ तब
वैराग्यादिकदृढहोइ॥ तबसबठोरब्रह्महीकोंदेखे॥ जैसें
सनकादिकसबठोरब्रह्मजांनिकेंब्रह्मानंदकोअनु
भवकरतहें सोयहप्रकारसतयुगत्रेताद्वापरमें
हूंकोईएकसोंसिद्धहोतहतो। औरकलियुगमेंतोवि
षयादिकलौकिकासक्तजीवहें। एकइंद्रीवसनांही
तिनकोंएतनेसाधनकहांतेसिद्धहोइ। औरसाधन

बिनाज्ञानकहांतेसिद्धहोइ॥ तातेंज्ञानकोदूसरोअंतरंगसा
धनदृढहोइतोआगेंकछूज्ञानसिद्धहोइ॥ औरभक्तिमा
र्गमेंकेवलप्रभूकोऐकआश्रयहीमुख्यहे॥ साधनकी
अपेक्षानांहीहें॥ तातेंज्ञानकेदोयमुख्यसाधनहें॥ प्रथम
यज्ञादिकदूसरेंश्रवणादिकयहीकरिकेंज्ञानसिद्धहोइ
याप्रकारपंचदसश्लोककोनिरूपनभयो॥ १५॥ तहां
अबबादीआसंकाकरतहें॥ जोयज्ञादिकमेंअनेककले
सहोंइ॥ तबसिद्धहोइ॥ औरश्रवणादिकमेंजबसत
संगमिले॥ श्रवणादिकतबसिद्धहोइ॥ सोयेतनोयत
नकाहेकोंकरें॥ संन्यासलेजनेउजनेउजरायपीवें॥ पा
छेंभगवदसमर्णसबछोडिकेंकरेतोतत्कालकृतार्थ
होइ॥ ऐसेबिनाश्रमभगवत्प्राप्तिहोइ॥ तातेंसंन्यास
धर्ममुख्यहे॥ याप्रकारकोईकछें॥ तहांकहेतहें श्लोक
अतकलौसंन्यासस्यपश्चात्तापायनान्यथा॥ पाषंडत्वं
भवेच्चापितस्माज्ञानेनसंन्यसेत॥ १६॥ याकोअर्थ॥ अब
कहेतहेंयाकलियुगमेंसंन्यासधर्मवेगकाहूकोंसि
द्धहोइनांही॥ काहूकीदेखादेखीसंन्यासलेइ॥ तथारंच
कबैराग्यादिककेभएतेसंन्यासलेइ॥ तोयाप्रकारभ्रष्ट
होइजाइ॥ सोकहेतहेंजोपहेलेंतोजनेउजरायकेंपीवे
मोंनरहे॥ अचलाकोपीनयहराखे॥ याप्रकारकेभेषको
धारनतोकीयो॥ पाछेंविषयादिकलौकिकासक्ततोछूटे
नांही॥ इंद्रीकोईबसभईनांही॥ तातेमनमें॥ पछितांइ
जोयहवस्तुमिलेनांही॥ पाछेंपाषंडकरेजोमोकोंस्वा
मीजांनेंलोगतोमेरीपूजाहोइ॥ याप्रकारसोंराजसीलो
गतोमेरीपूजाहोइ॥ याप्रकारसोंराजसीलोगनसों
पुजायबेकीअपेक्षाकरे॥ सोखांनपांननमिलेदुखपावे

जोकदाचि मिलेतो वह अन्नादिकतें विसयवासनाबढे त
वऊ परस्त्रीगमनतें भ्रष्ट होइ ॥ जो विषय न मिले तो मन
हीकरिकें अनेकप्रकारकी कल्पनां करे ॥ सो ऐसे संन्यासी
कों नर्क ही होइ ॥ काहेतें यह वेदकी मर्यादा है जो संन्यासी
को मन एक क्षन रूं कोई वस्तुमें जाय जो फलानी वस्तु
न मिली ॥ तो वह संन्यासी संन्यासधर्मतें भ्रष्ट भयो ॥ सो
वाकों नर्क होय तो जो कोई संन्यासी विषयादिक खांन पां
न करे ॥ लौकिकको संभाषन करे ॥ ताकों नर्क होइ यामें
कहा कहनों ॥ तातें प्रथम घर ही में रहिकें भगवद्ध
र्मश्रवणादिक करि जहां ताईं भगवान में प्रेम इंद्रिया
दिक बस न होइ ॥ तहां ताईं घर न छोडे ॥ और जहां जाय
तहां दुसंग मिले ॥ कलिके दोषबाध्या करे ॥ तातें ऐसो ज्ञा
नमार्गीयको संन्यास है ॥ और भक्तिमार्गमें ऐसो संन्यास
नांही है ॥ भक्तिमार्गमें साधन नांही है ॥ केवल एक श्रीठाकु
रजीकों आश्रय यही साधन पाछें श्रवणादिक नवधा
भक्ति रू करे ॥ सो ज्ञानीकी रीतिसों ज्ञानसिध्यर्थकों मनास
हित न करे ॥ केवल आप अपने प्रभुकों जसही जांनिकें
दासभावसों करें ॥ सो कदाचित ऐसे भगवद्भक्तकों रूं
दुसंग होइ ॥ विषयादिक वासना होइ ॥ तउ श्रीठाकुरजी
उह भक्तकों त्याग न करें ॥ काहेतें भक्त बीजकों नांसनां
हीं ॥ फेरि अनुग्रह करिकें जन्मांतरमें दोषकी निव
त्तिकराय अंगीकार करें ॥ यह भक्तिमार्गमें त्यागजीव
नकों श्रीठाकुरजी न करें ॥ जैसें भरथजी राज छोडिकें व
नमें भगवद्स्मरणकों गये ॥ सो मृगके छोंनामें मोहला
ग्यो ॥ तातें मृगकी जोंनि पाये ॥ परंतु भक्तिमार्गको ज्ञान
न गयो ॥ मृगयोंनिमेंरू भगवद्स्मरणकीये ॥ तातें भक्तिमा

र्गमेंभक्तिकीवृद्धिहोइ ॥ परंतुहांनिनहोइ यहउक्तअं
गीकारहे ॥ तातेंयहकलिकालमेंकेवलभगवानकोआ
श्रययहीमुख्यफलहे ॥ ताहीकरिकेंभगवदप्राप्तिहोइ
औरज्ञांनमार्गमेंसंन्यासादिकधर्ममेंभ्रष्टहीहोइ
निश्चय ॥ याप्रकारज्ञांनीकेसंन्यासमेंबाधकहे ॥ याप्रका
रकोइसश्लोककोनिरूपनभयो ॥ १९ ॥ तहांअबवादीअसं
काकरतहें ॥ जोकलिकालदोषरूपप्रलयहे ॥ सोभक्ति
मार्गकेसाधनमेंप्रतिबंधदोषरूपकरोगे ॥ तबभक्ति
केसाधनबनिआवेंगेतो ॥ जेसेंकलिकालकरिकेंज्ञान
केसाधननहोइसकेंगे ॥ तबसबज्ञांनीभ्रष्टहोयकें
संसारासक्तिहोंइगे ॥ तोभक्तिमार्गीकेसेंउद्धारहोइगे
काहेतेंएकतोकलिकालमहादोषरूपसबकेसुधर्म
कोबाधकहे ॥ तामेंहूंभगवानविचारेंजोयहकलिकाल
मोकोंजोकोईमेरोनांमलेइगो ॥ तथाकेवलमेरोआ
श्रयकरेगो ॥ ताकोंबिनांसाधनमेरेलोकमेंचलोआवेगो
याप्रकारविचारिकेंजोजीवकोंमोहउपजावनों ॥ आ
श्रयकरिकेंभक्तितेंहीनहोइ ॥ सोकार्यविचारतभए ॥ त
बविचारेंजोमहादेवसोंमोहकराइऐ ॥ तबमहादेवजी
सोंआज्ञाकीऐजोकलिकालमहाघोरयुगआयोहे ॥ सो
यहपापीजीवकेवलमेरोआश्रयतेतथामेरेनांमके
प्रतापतेंउद्धारहोइ ॥ बैकुंठमेंचलेआवेंगे ॥ तातेंतुममि
थ्यासास्त्रप्रगटकरो ॥ मिथ्याफलकोनिरूपणकरो ॥ तामें
जीवनकोप्रवेसहोइजाइ ॥ मेरोआश्रयछूटे ॥ तबयहसु
निकेंमहादेवउरपे ॥ बहोतजोमेंभगवदभक्तहों ॥ में
तोजीवकोभलोहोइ ॥ उद्धारहोइजीवनकोंसोकरनों
यहमेरोधर्महें ॥ औरजोमेंजीवनकोंप्रभुतेंबिमुखक

रे॥ तोयहमहादोषमोकों होइ॥ सोमेंहूं बिमुखहोइजां
उंगो॥ सोश्रीभागवतमें सास्त्रपुरांनमेंकहेहें॥ जोभग
वांनकेसनमुखजीवनकोंकरें॥ तिनकोंहूंपरमफलहो
इ॥ भक्तिहोइ औरजोभगवद्धर्मतेंअंतरायकाहू
जीवकोंकरेतो ताकोमहादोषहोइकेंभक्तितेंहीनहो
इ॥ ताकोंआत्महत्याकोदोषहोइ॥ यहबिचारिकेंमहा
देवजीश्रीठाकुरजीसोंबिनतीकीयो॥ जोमेरीकहागति
हे॥ मेंजीवनकोंविमुखकरों॥ सोवहिमुखदोषमोकोंला
गेगो॥ तबश्रीठाकुरजीकहेजोमेरीआज्ञातेतुमकोंदोष
नलागेगो॥ औरतुमसहस्रनांमकोपाठकरियों॥ ताक
रिकेंतिहारोदोषनिवर्त्तहोइगो॥ तबमहादेवजीआप
नेअंसकरिसंकराचार्यजीकोसरूपप्रगटकीए॥ सोअ
नेकप्रकारसोंसक्तिसोंवेदादीपू[illegible]फलनिरूपनकी
ए हें॥ तथारिषिप्रग[illegible]सास्त्रप्रगटकीए॥ सो
ऐकतोकलिकाल॥ दूसरेभगवदइछाजीवनकोंमोह
करिबेकी॥ ता[illegible]जीवनकोंभक्तिकेसेंसिद्धहोइगी
तहोंश्लोककहेतहें॥ श्लोक॥ सुतरांकलिदोषाणांप्रबला
चादितिस्थितं॥ भक्तिमार्गेपिवेदोषतथाकिंकार्यमुख्य
ते॥ १९॥ याकोअर्थ॥ तातेंयहकलिकालकोंसुतहयहीसुभा
वहे॥ जोभगवद्धर्मतेहीनकरे॥ सोभक्तिमार्गकेसाध
नमेंभक्तिमेंप्रतिबंधहीहोइगो॥ तबभक्तिमार्गमेंहूं
भक्तनकोंभगवद्प्राप्तिकेसेंहोइगी॥ जेसेंज्ञानमार्गी
कर्ममार्गीययोगमार्गीयउपासनामार्गीयकलिके
दोषतेंभ्रष्टहोइगे॥ याप्रकारवादीसंदेहकरें॥ तहांश्री
आचार्यजीमहाप्रभूकहेतहें॥ श्लोक॥ अत्रारंभेननासः
स्यात्दृष्टांतस्याप्यभावतः॥ स्वास्थ्यहेतोपरित्यागाद्बाधके

स॰टी नास्यसंभवेत् ॥१५॥ याकोअर्थ ॥ अबकहेतहें ॥ जोभगवांन
२८ अर्जुनप्रतिगीतामेंकहेहेंजोभक्तजनभगवांनकोसर
णआए भक्तिमार्गकोआरंभसाधनकरतहें ।सोसाधन
करतहीमेंभगवद्प्राप्तिनांहीभईहे ।औरसाधनकें
सिद्धनवधाभक्तिएकहू सिद्धनांहीभईहे ।औरवीचमें
कालआयकेंबाधककीयो ॥ सरीरछूटिगयो ।तउवहभ
क्तगिरेनांही ॥ भक्तवीजदृढहोइचुक्योहे ।भक्तकोनांस
नांही ।काहेतेंअजामेलसारिखोपापीजोब्राह्मनहोइकें
व्यासादिकपांनआसुरक्तकीयो ।सोपूर्वजनमकोभ
क्तबीजहेतो ॥ सोताकूकोउद्धारकीयो ॥ तातेंभक्तगिरें ।य
हनकहे ।नपुरांनमेंसुनेंभक्तकों ।गिरतकोंदेख्यो ।भक्त
कृ केगिरिबेकीसंभावनांनकरनी ।काहेतेभक्तकेरक्षकतो
भगवांनआपुहें ।तातेसदाई ।कहोजोजयविजयपोरिया
भक्तहते ।तिनकोंसनकादिककेश्रापतेंवैकुंठतेगिरे
असुरजोंनिपाये ।सोभक्तकूगिरियतसुंनीयतहें ।श्री
मद्भागवतमेंहीं ।याप्रकारपूर्वपक्षहोइ ।तहांकहेतहें
पर जोइजयविजयवैकुंठतेंभुंमितेंअसुरभए ।सोभगवां
नकीइछायहभई ।जोभुंमिपरलीलाकरिए ।तवसग
रेवैकुंठवासीभक्तनकोंलेकेंश्रीठाकुरजीभुंमिपरप्र
गटभए ।तिनकोंकहागिरंकहिए यहतोभगवांनया
प्रकारप्रगटनहोइतोभक्तभगवांनकीलीलाकहा
गांवें ।तातेंऔरजोजगतमेंजीवहें ।तिनकेउद्धारार्थ ।भ
गवांनकोंभक्तनकोंप्रागट्यहे ।अन्यथाऔरभावसर्व
थामनमेंसंभावनांकूंनांहीकरनों ।पाछेंइजयविज
यकोंतीसरेजनममेंलीलाकरिकेरिआपनेवैकुंठमेंस्थि
तिकीए ।तातेंभक्तिमार्गकेभक्तकोंनासनांही ।भक्तकेसा

धनकों कछू नांसनां ही ॥ भक्तिमार्गीयकों फल कछू निश्चे यह
भगवत्प्राप्तिहोइगी ॥ औरभक्तिमार्ग अत्यंत सुगम है
जीवनकों भक्ति ही करिकें उद्धार है ॥ काहेतें ज्ञानमार्ग क
र्ममार्ग योगमार्ग उपासनामार्ग ॥ इत्यादिक मार्ग हैं
सो कैसे हैं ॥ जो महागंभीर यह संसार समुद्र है ॥ ताकों त
रिकें बिना नौका पे जावो ॥ तामें अत्यंत श्रम जलमें जीवन
कों भय जो एक साधन में चुके तो भ्रष्ट होइ जाइ ॥ जन मज्ज
न में ते साधन कोयो है ॥ सो सब नास होइ ॥ ताकी रक्षा भग
वान न करें ॥ काहेतें भगवानकों आश्रय होय तो भगवा
न रक्षा करें ॥ साधनको आश्रय है ॥ तातें माया के गुन ज्ञा
नमार्गीयनकों बाधक करत हैं ॥ और ज्ञानमार्गीय जो
संसारसमुद्रकों तरिकें कदाचित कोइ पार गयो ॥ तउ सं
सार के छूटते भगवत्प्राप्ति नाही ॥ पाछें अनेक वन प
र्वत रूप जो दुःसंग है ॥ सो बोहोत बाधक करें ॥ तिनक
रि ऐसे कठिन मार्ग में जीव को कहा सामर्थ्य है जो भग
वानकों पावें ॥ मुक्ति ताइ यह संभव नाही ॥ ऐसे भक्तिमा
र्ग में नाही है ॥ भक्ति मार्ग कैसो है ॥ जामें सूधो मारग ही है
जामें एक द्रढ श्रीगोकुलेशजी को आश्रय है ॥ तामें उह मार्ग
में सुंदर बिछोना बिछे हैं ॥ कछू नीचो ऊंचो नाही ॥ ऊपर
चंदोवा छाया है ॥ सूर्यादिक को ताप नाही लागे सो भक्तिमा
र्ग के साधन में कछू कष्ट नाही ॥ भगवत् महाप्रसाद ते
सगरी इंद्री संतुष्ट करें ॥ महाप्रसादी वस्त्र ते अपनो दे
ह की रक्षा करें ॥ तामें कछू बाधक नाही हैं ॥ ऐसे सुग
म सुख के मार्ग में नेत्रकों मूंदिकें चले ॥ सो उ गिरे नाही
तातें भक्तिमार्ग में गिरिबेकी संभावना कछू नाही ॥ काहेतें
भगवान भक्तके रक्षक हैं ॥ तातें ज्ञानमार्ग में जाकों ज्ञा

स.टी. नसिद्धहोइचुक्योहोइ॥मोक्षनभयोहोइ॥तहांतोईकंगो
२८ डुसंगभयोहोइतोगिरेज्ञांनभ्रष्टहोइजाइ॥ज्ञांनीकों
मायाकेगुंनबाधककरें॥मुक्तिभऐपाछेंसंसारतेंछूटे
सोमुक्तिकलिकालकेदोषतेंसतजन्मपर्यंतसाधनको
करेंसोंसदांऐकरसनिबहेनांहीं॥तातेंकलिकालमेंभक्ति
मार्गकोमुख्यभगवत्प्राप्तिकोउपायहे॥जामेंआरंभते
लेभगवत्प्राप्तिताईं॥सदांसुखहीं॥दासभावहोइ॥केते
कद्रव्याश्रयकरिजोकछूभजनबनें॥निश्चावेसोकरें॥ता
कोंनिश्चयभगवांनफलदांनकरें॥याप्रकारश्रद्धाद
सश्लोककोनिरूपनभयो॥१५॥तहांअबबादीअसेकाक
रतहें॥जोभलोभक्तिमार्गसोंभगवांनकेआश्रयतेंमा
याकेगुंनभक्तनकोंबाधकनाकरेंगे॥परंतुभगवांन
कीइछातेमहादेवब्रह्मादिकमोहउपजावनकोनि
मित्तप्रगटहोइजीवनकोंमोहकीऐ॥सोभगवानकी
येप्रतिबंधकनिवृत्तिकोंउपायनांहीहें॥जोभगवांनकी
इछाकोंटारें॥तातेंकलिकालमेंभक्तिमार्गीयकोंकहां
तेफलसिद्धहोइगो॥याप्रकारबादीप्रश्नकरे॥तहांकहे
तहें॥श्लोक॥हरिरत्रनसक्योतिकर्तुंवांकुतोऽपरे॥अन्य
थामातशैवालांस्तन्येपमुसुक्षुचित॥१६॥याकोअर्थ॥अब
कहेतहेंजोभक्तनकेसाधनमेंभगवांनहूकोंसामर्थ्यनां
हींहें॥जोभक्तनकोंप्रतिबंधकरें॥तोमायातथामायाके
गुंनतथादेवतानकोकाहूकोंसामर्थ्यनहोइ॥यामेंकहा
कहेनों॥काहेतेंश्रीभागवतमेंबर्णनहें॥जोअंबरीषराजा
भगवद्भक्तहते॥तिनकोंप्रतिबंधकरे॥जिनकोंदुर्बासा
आऐसोऐकपरकृत्याप्रगटकरी॥औरश्रापदेवेकोंबिचा
रकीऐ॥तबचक्रसुदर्सनकृत्याकोंतोतत्कालतहांहींभ

स्मकरिदीयो ॥ औरदुर्वासाकोंजारनलाग्यो ॥ तबदुर्वासातीनोंभुवनमेंभाजे ॥ परंतुकहूं बेठिबेकोठिकानोंनमिल्यो पाछेंभगवांनकेपासगए ॥ तबभगवांनकृंप्रहकहे ॥ जोमेरोसांमर्थ्यनांहीहें ॥ जोचक्रसुदर्सनकोनिवारनकरों ॥ जोतुममेरोअपराधकरतेतोमेंनिवारनकरतो मेंभगवांनहों ॥ मेरीआज्ञात्रैलोकमेंवर्तमानहें ॥ परंतुभक्तनकेऊपरनांहीहें ॥ भक्तनकीआज्ञामेरेऊपरहे ॥ भक्तकहेंसोमेंकरों ॥ तातेमेरोसांमर्थ्यनांहीहें ॥ जोभक्तनकेकार्यमेंकछमेंप्रतिबंधकरों ॥ तातेंतुमअंबरीषभक्तपासजाव ॥ तबदुर्वासाराजापासआयो ॥ तबराजानेंचक्रसुदर्सनकीस्तुतिकीनी ॥ तबदुर्वासाछुट्यो ॥ यहश्रीभागवतमेंप्रसिद्धहीहें ॥ औरमहाभारथमेंहेंजोएकटीटपक्षीहते ॥ सोऐकवृक्षमेंअंडादिएहते ॥ सोजादिनतेंबचाप्रगटे ॥ ताहीदिनतेंमहांभारथयुद्धकोआरंभभयो ॥ सोदोऊपक्षीतोस्त्रीपुरुषडरपिगए ॥ सोउनकोंबहोतदुखभयो ॥ जोहमतोउडिजायगें परंतुबचाहमारेंमरेंगे ॥ परंतुएकउपायहे ॥ जोयुद्धमेंश्रीकृस्नहें ॥ सोउनपरकृपालहें ॥ वेरक्षाकरेंतोबचाजीवेंगे ॥ याप्रकारवहबचाकेमावापनेंस्मर्णकीयो ॥ श्रीकृस्नकोसोजबदोऊऔरकासेंनाबराबरिसनमुखभई ॥ तबएकमहागजराजउहस्तीकोंकेतनेमनकोघंटाहतो ॥ सोटूटिपर्यो ॥ सोलराईमेंहाथीनकेधकानमेंब्रहततोसबटूटिपरे ॥ उहवचाभुंमिपरगिरे ॥ ताहीसमयवहघंटाटूटिकेंउहबचाकेऊपरगिर्यो ॥ ताकेनीचेंदोउवेबचारहे ॥ सोमहाभारथहोहीचुक्यो ॥ सगरीसेनामारीगई ॥ पाछेंभगवांननेंवहघंटाउलटिकें पाछेंद्वारिकापधारे ॥ तब

स·टी· २९ वहवचाकेमावापआएसोदेखेंतोहोऊवचाहे। तवश्री
कृष्णकीस्तुतिकीऐ। पाछेंजनहोऊनकोंओरहोऊवचा
नकोंऊनचारोनकोंभगवदआग्रहभइ। तातेभगवान
कोंस्मएआश्रयतेंलोकिकरूसबसिद्धहोइ। औरअ
लोकिकरूसबसिद्धहोइ। तातेंभगवानरूभक्तिकेसा
धनमेंबाधकनकरें। जेसेंमाताकोसहजस्नेहपुत्रमें
होइ। जेसेंभगवानकोंसहजस्नेहभक्तनमेंहे। जेसेंगाइ
नववछरानजनें। तबकाहूकोंदूधननदेइ। तत्कालगा
इकोंवछरामेंपरमस्नेहहोइ। काहेतेंगायकीआत
मांहें। जेसेंभगवानकीआतमांभक्तजनहें। सोभक्त
नकीरक्षानिश्चेंहीकरें। जेसेंआपनेपुत्रकोंस्नेहपसु
पक्षीमनुष्यकोंहे। सोआपनेपुत्रकोंदूधप्यावे। पो
षनकरे। तेसेंजोभगवानकीसेवाभक्तिकरें। तिनकोंभग
वानपोषनकरें। तिनकीरक्षाकरें। काहेतेंभक्तनके
मातापिताभगवानहें। सोस्वप्नमेंहूप्रतिबंधनकरें
तातेंभक्तिमार्गसबतेंश्रेष्ठहें। जामेंविनाश्रमसाधन
रूमेंसुखफलरूमेंसुखफलरूमेंसुखसाधनरू
फलहीसमानहें। भगवदसेवापरमफलरूपयाप्र
कारऐकोनविंसश्लोककोनिरूपनभयो। १९। अवश्री
रूकहेतहें। श्लोक। ज्ञाननामपिवाक्येलानभक्तंमोहई
ष्यते। आत्मप्रदप्रियाच्चापिकिमर्थंमोहईष्यते। याको
अर्थ। अवश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकहेतहें। जोभगवान
गीतामेंकहेहें। जोज्ञानीहें। सोमेरोहृदयहें। सोऊमोकों
भक्तकेसमांनप्रियनांहीहे। तातेंज्ञानीकोंमोहहोइ। औ
रभक्तकोंनहोइ। काहेतेंज्ञानीकोंश्रमवहोतजीवआत
मोंदेहइंद्रीसबकोविचारकरनों। औरसुभवस्तुयह

तपादिक इंद्री सबनकों वस करनों ॥ यह साधन हीकों
मुख्य ज्ञानिकें भगवांनके मिलनको जत्न करत हें ॥ और
भगवांनको आश्रय नांही हें ॥ और भगवांनके धर्मको
आश्रय हे ॥ तातें भगवांनकों ज्ञांन प्रिय हे ॥ परंतु भग
वांनकों भक्तके समांन नांही हें ॥ भगवांनको सुभाव
हे ॥ जो जीव जा भावसों भगवांनको भजन करें ॥ ताही
रीतिसों भगवांन वा जीवकी रक्षा करें ॥ सो भक्तजन हें
सो केवल भगवांनको आश्रय होइ ॥ भक्तिमारगको
आचरन करत हें ॥ तातें भगवांन आपुही भक्तनकी
रक्षामें तत्पर रहेत हें ॥ और ज्ञानी भगवांनके धर्मइ
त्यादिकमें आश्रय हे ॥ सो भगवांन धर्मही द्वारा धर्म
कराइ जब धर्म सिद्ध होइ ॥ तब रक्षा करत हें ॥ सो भक्त
धर्मतें हीन होइ ॥ तो भक्तकी रक्षा भगवांन करें ॥ तातें
भक्तिमार्ग श्रेष्ठ हे ॥ या प्रकार श्लोकको निरूपन
भयो ॥ ९ ॥ अब और श्लोक कहत हें ॥ श्लोक ॥ तस्मादुक्त प्रकारे
ण परित्यागो विधीयतां ॥ अन्यथा भ्रस्यते स्वार्थादिति
मे निश्चिता मतिः ॥ याको अर्थ ॥ अब वादी आसंका करत हें
॥ जो ज्ञानी तो भगवांनको ह्रदय हे ॥ यह गीतामें कहे हें ॥
॥ सो ज्ञानी पर भगवांन कृपा करत ही हें ॥ जो कृपा न क
रें तो आगें मोक्ष कहांतें ज्ञानीकों सिद्ध होइ ॥ तातें ज्ञानमा
र्ग कहे ॥ तहां श्रीआचार्यजी कहेत हें ॥ जो भगवांन कूं तो
सगरो जगत प्रिय हे ॥ काहूके ऊपर द्वेषभाव नांही हें ॥
ऐक भक्तनको द्वेषी हे ॥ ताके ऊपर प्रसन्न नांही हें ॥ औ
र तो सबनकी रक्षा करत हें ॥ तामें ज्ञानी तो ह्रदय भग
वांनको हे सो प्रिय हे ॥ परंतु या कलिकालमें ज्ञान सि
द्ध हीनांही ॥ तो प्रिय कहांते होइ ॥ और मोक्षफल कहां

तेहोइ॥ तातेंज्ञानमार्गकीरीतिसोंजोकोईसंन्यांसधर्म
करे॥ सोयाकलिकालमेंनिश्चेंभ्रष्टहोइ॥ औरजोभक्तिमा
र्गकीरीतिसोंघरहीमेंसाधनकरे॥ व्यसनभ्येंमभगवांनमें
होइ॥ इंद्रीयादिकसबवसहोंइ॥ तापाछेंत्यागकरें॥ ताको
आगेंघरछोडें॥ मायाकेगुंनबाधकनकरें॥ सोऊपर
भक्तिमार्गकोसंन्यांसकहिआए॥ ताहीप्रकारसोंचलेतो
आगेंभक्तिहोइ॥ जोमेरेंकहेंतेविरुद्धचले॥ सोनिश्चय
भ्रष्टहीहोइगो॥ यहमेरीमतिहे॥ सोमेरेंआपनेभक्त
नकेलिएंपुष्टिमार्गीयभक्तहें॥ तिनकेअर्थयहसिद्धां
तनिरूपनकियोहे॥ याप्रकारएकबिंसश्लोककोनिरू
पनभयोहे॥२१॥ अबकोईकहेंजोतुमयहसिद्धांतआपनें
उक्तसोंकहे॥ केकोईदेवतारिषिअवतारादिककेबलते
कहें॥ याप्रकारकोअभिप्रायकरकेश्लोककहतहें॥ श्लोक॥ इति
कृष्णप्रसादेनवल्लभेनविनिश्चितं॥ संन्यासवर्णनंभक्ता
वन्यथापतितोभवेत॥२२॥ याकोअर्थ॥ अबश्रीआचार्य
जीमहाप्रभुकहतहें॥ जोसबदेवनकेदेवश्रीकृष्णपूर्ण
पुरुषोत्तमसर्वरिषिमुनिब्रह्मासिवादिककेध्यानहूं
मेंदुर्लभ॥ तिनकेप्रसादकरिकेमें॥ यहसिद्धांतवर्णन
कियोहे॥ काहेतेमेंवल्लभहोंमेंश्रीकृष्णकोवल्लभहों॥ श्री
कृष्णमेरेंवल्लभहें॥ तातेंपरमप्रियजोश्रीकृष्णतिनके
बलतेयहभक्तिमार्गकोसंन्यांसयहभक्तनकोविनां
श्रमसिद्धहोइ॥ भगवांनसदांभक्तनपरकृपाकरें॥ सोव
र्णनकीए॥ तातेपुष्टिमार्गीवैष्णवकोंकदाचितदुःसंगभए
तेंजीवस्वभावतेचिंताहोइ॥ जोहमघरकोत्यागकेसेंक
रें॥ श्रीआचार्यजीकीआज्ञानांहीसोचितास्वप्नमेंहूंनकर्तव्य
सुखेंनपुष्टिमार्गकीरीतिसोंभगवदसेवाकरे॥ सगरी

इंद्रीनकों महाप्रसादसों पुष्टिकरि इनकों भगवद्रूप
रसकरि अपने बस होइ ॥ व्यसन भगवान में होइ ॥ देहादि
कनके दुखसुख बाधक करें तो सुखेन त्यागघरकों करि
मानसी सेवा में भावसहित आश्रय करों ॥ यह प्रकार लीला
में प्राप्त होइ ॥ तहां स्वरूपानंदको अनुभव होइ ॥ यह परम
फलरूप संन्यास ॥ तातें या प्रकार मेरी आज्ञा प्रमान जो
चलेगो ॥ ताकों आगें फल होइगो ॥ जो मेरी आज्ञा तें अन्यथा
रीतिसों चलेगो ॥ सो सर्वथा परेगो ॥ या प्रकार भक्तिमार्ग
को सिद्धांत ज्ञानमार्गकों सिद्धांत श्रीआचार्यजी दैवीजीव
नके अर्थ निरूपन कीए ॥ सो अब श्रीहरिरायजी कहत
हैं जो भक्तिमार्ग में आयकें पुष्टिमार्गको फल जाके भाग्य
में होइगो ॥ सो यह संन्यास भक्तिमार्गीय परमरसरूपता
कों प्राप्त होइगो ॥ यह सब मार्गको सार है ॥ तातें में यह ग्रंथ
कों श्रीआचार्यजी के हृदयको आसय उनकी कृपा तें नि
रूपन कीयो है ॥ दैवीसृष्टि के उद्धारार्थ ॥ इति श्रीवल्लभाचा
र्यविरचितं संन्यासनिर्णय ताकी टीका श्रीहरिरायजी
कृत संपूर्णं ॥ ॥ अथ श्रीबालबोधकी टीका श्री
देवकीनंदनजी कृत लिख्यते ॥ अब श्रीदेवकीनंदनजी दस
श्लोक करि मंगलाचरन करत हैं ॥ सो कहत हैं ॥ मंगलाच
रणको प्रथम श्लोक ॥ यच्चमत्कृतिरेवात्र निरस्यतितम
स्मृता ॥ अलंकुर्वंतु मद्वाचमाचार्यचरणविधू ॥ १ ॥ याको अ
र्थ ॥ अब प्रथम श्रीआचार्यजी के चरनकमलकों नमस्का
र करत हैं ॥ सो कैसे श्रीआचार्यजी के चरण हैं ॥ परमकोम
ल भक्तनके सुखदायक ॥ तिनमें दस नख चंद परमसो
भा देत हैं ॥ सो मेरे अंतःकरनमें तमरूप अंधियारो है ॥ ता
के निराकर्त्ता हैं ॥ ऐसे श्रीआचार्यजी के चरनमें नखचंद्र के

बाल. प्रकासतें मेरे हृदयमें अज्ञानरूपी तमकों हरि लिये
३१ हें ॥ ताकरिकें में अपनी बुद्धि अनुसार यह टीका करत
हों ॥ या प्रकार श्रीआचार्यजी के चरनकमलकों नमस्का
र करि ॥ अब श्रीगुसांईजी के चरणकमलकों नमस्कार क
रत हें ॥ १ ॥ श्लोक ॥ पदाश्रयवतामेव वल्लभीजनवल्लभ ॥ प्र
सिदित विनोपायैर्विठ्ठलेसतमाश्रये ॥ २ ॥ याको अर्थ ॥ अब
श्रीदेवकीनंदनजी श्रीगुसांईजी को नमस्कार करत हें
श्रीगुसांईजी केसे हें ॥ जो जीव श्रीगुसांईजी की सरण आए
दृढ आश्रय करिकें रह्यो हें ॥ जिन जीवन के ऊपर गोपीजन
वल्लभ जो श्रीठाकुरजी सो सदा प्रसन्न रहत हें ॥ ऐसे वल्ल
भी जो श्रीगुसांईजी के निजजन परम प्यारे हें ॥ तिनही जीव
पर भगवान कृपा करत हें ॥ सो श्रीगुसांईजी की कृपा ता
जीव पर हे ॥ ऐसे श्रीगुसांईजी के चरणकमलको आश्रय
होय ॥ वारंवार नमस्कार करत हें ॥ या प्रकार होय श्लोक करि
श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी कों नमस्कार कीये ॥ अब श्री
देवकीनंदनजी अपने पिता श्रीरघुनाथजी तिनके चर
ण कों नमस्कार करत हें ॥ श्लोक ॥ पित्रपदांबुजयुगं भक्त्या
नत्वा सुदुर्लभ्यया ॥ भक्ति स्वामनति कृष्ण बालबोधी विचा
र्येत ॥ २ ॥ याको अर्थ ॥ अब श्रीदेवकीनंदनजी कहत हें
हमारे पिता श्रीरघुनाथजी परम कृपाल तिनके पदांबु
जयुग दोऊ चरणारविंद तिनकों हम अत्यंत भक्ति सहि
त वारंवार नमस्कार करत हें ॥ तीनो प्रकार मन क्रम वचन
करि भक्ति सहित नमस्कार करत हें ॥ काहे तें श्रीआचार्यजी
महाप्रभु कृत बालबोध सर्व सिद्धांत तिनकी टीका को वि
चार करत हों ॥ सो बड़ो अति कम होत हें कहा ॥ श्रीआचार्य
जी की वानी कहा ॥ मेरी मति अति तुछ ॥ सो यह अपराध

अपनें अंगीकृतजांनिकें श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी श्री
रघुनाथजी तीनो जनें छमां करो ॥ कृपाकरिकें बालबोधकी
टीकाकरनमें जोगुप्ततादेऊ ॥ या प्रकार नमस्कार कीयें ॥ अ
ब और कछु विज्ञप्ति करत हें ॥ २ श्लोक ॥ भक्तिमार्गे फलं कृष्ण
रसास्वादस्तु दुर्लभः ॥ जीवनां मतएवान्यमते सुस्पृहते र
ति ॥ ४ ॥ याकों अर्थः ॥ अब कोई कहे जो श्रीआचार्यजी कहा बा
लबोध अर्थ सिधके लीयें प्रगट कीये हें ॥ तुम टीका काहे
के लीयें करत हो ॥ या प्रकार कोई पूर्वपक्ष करे ॥ तहां कहत हें
जो ॥ भक्तिमारगमें फल हें ॥ सो श्रीकृष्ण हें ॥ सो कृष्णरस को
स्वाद तो जीवकों परम दुर्लभ हें ॥ काहेतें जीवकी मति श्रीकृ
ष्णमें लागत नांही ॥ ताकरिकें कृष्णरसकों रहित जीव हें सो
श्रीकृष्णमें जीवकी मति नांही लागति ताकों कारण कह
त हें ॥ श्लोक ॥ तत्प्रेरितेन कृष्णेन तत्सुज्ञानिवैकल्लो विसे
षप्रवर्त्तते स्वातंत्र्ये युगेत्रयो ॥ ५ ॥ याकों अर्थः ॥ अब कह
त हें ॥ जो श्रीकृष्णमें मति याते नांही लागत जो श्रीठाकुरजी
प्रेरित श्रीमहादेवजीनें तयह कलियुगमें प्रगट कीये हें
सो विसेष जगतमें प्रवर्त्त भयो ॥ ताकरिकें मायावादमें स
ब जीवकी बुद्धि लागी हें ॥ ताकरिकें जीव अपनें स्वतंत्र नांही र
हें ॥ अन्याश्रय करि जीव भ्रमत भये हें तहां कोई पूर्वपक्ष
करे जो महादेवजी कृत मायावाद ऐसें मिथ्यावाद ऐसें मि
थ्यावादमें जीव क्यों प्रवर्त्त भये हें ॥ या प्रकार कोई कहे तहां क
हत हें ॥ श्लोक ॥ तत्फलप्रसंसैवतत्र तत्त्वनिरूप्यते ॥ तंनमो
हवसतो लोकपरिभ्रमरति केवलं ॥ ६ ॥ याकों अर्थः ॥ अब
कहत हें ॥ जो जीव मायामतमें प्रवर्त्त भये ॥ ताकों कारण यह

जोमहादेवजी संकराचार्यजी रूप प्रगट होयके मोहसास्त्र
प्रगट कीए ॥ सो वेदतें विरुद्ध फलरूप निरूपण कीये लौ
किक फल की प्रसंसा कीये ॥ यह मंत्र तो राजा वस होइ यह मं
त्र तें सर्वादिक वस होइ ॥ यह मंत्र तें द्रव्य मिले ॥ और भूतप्रे
त के अनेक मंत्र तिन को फल विना साधन ही जगत में प्रसि
द्ध ॥ ऐसो निरूपण सुनि जीव तो तुच्छ बुद्धि हें ॥ सो विपरीत
फल के साधन में लागे ॥ सो सगरो लोक मोहित भये ॥ माया
मत में भ्रमण करन लागे ॥ ताकरिके कृष्णरस की प्राप्ति नांही
होत ॥ सो ऊपर वादीने पूर्वपक्ष कीये ॥ जो बालबोध श्रीआचा
र्यजी कहा हे के लीये कीए ॥ और तुम भी कहा हे के लीये करत
हो ॥ सो तहां कहत हें ॥ सो या समे मोहसास्त्र में दैवी जीव भ्र
मत हें ॥ तिन के निकासिवे के अर्थ प्रगट करत हें ॥ श्लोक
श्रुत कदापि कृष्णस्य भजनं लभते न स ॥ फलभावादैवसृ
ष्टिप्रयत्नवान्सर्वशः ॥ ७ ॥ याको अर्थः ॥ श्रीआचार्यजी
भूतल में प्रगट होइ के यह विचार जो जीव तो सगरे दैवी जी
व आसुरी सगरे लोक मा या मत में मोहित भरे हें ॥ कोई श्रीकृ
ष्ण जे भगवान तिन को भजन नांही करत ॥ ताकरिके श्रीकृ
ष्णरस भक्तिमार्ग को सो फल काहू को न मिले ॥ सो जब फल
को अभाव भयो ॥ तब दैवी सृष्टि हे सो ऊद्व्या होय जाइगी
दैवी सृष्टि को कछु जो फल भक्तिमार्गीयन को भयो ॥ तब सर्व
या निःप्रयत्न व्यर्थ होयगी ॥ ऐसो श्रीआचार्यजी देषि मन में
विचारे ॥ जो दैवी सृष्टि व्यर्थ भई ॥ तब हमारो मार्ग कछु और प्राग
ट्य कछु व्यर्थ भयो ॥ काहेतें हमारो प्रागट्य तो दैवी सृष्टि के उद्धा
रार्थ ही हें ॥ ऐसो विचार श्रीआचार्यजी कीये ॥ सो आगे कहत हें

श्लोक ॥ दैवीसंपन्नमोहायेह्युक्तिस्तुहीविरुध्यते ॥ अत
करुणया बालबोधमग्निश्चकाराहि ॥ ८ ॥ याको अर्थ ॥ दैवी
सृष्टिमोहकरिकेंज्ञानरहितभई ॥ सो यह विरुधफल हें
दैवीसृष्टिकोंफल कृष्णरस हें ॥ सो सिद्धिभयो ॥ तो यह युक्त
विरोधवकृत हें ॥ याप्रकार श्रीआचार्यजी परमकरुणा क
रे हें ॥ अपनी दैवीसृष्टिके उधारअर्थ: परमकरुणा करिबा
लबोधग्रंथ अलौकिक अग्निरूप श्रीआचार्यजी सो प्रग
ट करत भये ॥ जैसें बालक अज्ञानी होइ तो मातापिता शि
क्षा करत हें ॥ तैसें ही दैवीजीव अज्ञान करिकें महामोहमें प
रे हें ॥ सो दैवीसृष्टिके मातापिता सिक्षा करत हें ॥ तैसें ही दैवी
जीव अज्ञान करिकें मोहमें परे हें ॥ सो दैवीसृष्टि कों माता
पिता गुरु और स्वामि सर्व श्रीआचार्यजी हें ॥ सो अपने बा
लककों सिक्षा करि [illegible] बोध करत हें ॥ तातें या
ग्रंथ कों नाम बालबोध हें ॥ ताको अभिप्राय कहा ॥ सो आ
गे के श्लोक में निरूपण करत हें ॥ श्लोक ॥ अष्टादशानां
मनात्र श्री[illegible] ॥ पुराणस्मृतीनांच प्रमाण
त्वाप यास्मृता ॥ याको अर्थ: ॥ यह बालबोध के अष्टादश
श्लोक हें ॥ ताको अर्थ यह हे जो ॥ भगवद्वचन करि प्रमाण
गीता जितने के अष्टादशाध्याय हें ॥ तातें जैसें गीता जी स
र्व को प्रमाण हें ॥ तैसें यह बालबोध सबको प्रमान हें ॥ और
पुराण हू अष्टादस हें ॥ सो प्रमाण के लीयें अष्टादस श्लो
क बालबोध के कीये हें ॥ याप्रकार जैसें गीता पुराण स्मृति
सबको हें ॥ सबसार हें ॥ तैसें यह बालबोध में वर्णन करत
हें ॥ यह स्थापनार्थ बालबोध बालबोध की टीका कहत हें
अब और रूप श्लोक की संख्या कहत हें ॥ श्लोक ॥ तावंतकपि
ता श्लोका आधेनोपेकमस्तया ॥ अतेर्ईनोपसंहारस्तेनसा

बा.टी. र्वैनविंसती ॥ १ ॥ याकोअर्थ ॥ अवकहतहेंजोबालवोधके
३३ अष्टादसश्लोकहें औरबालवोधकेअंतमें प्रथमश्लोक १
करिबालवोधउपक्रमकहतहे ॥ सदाआनंदरूपभगवान
हें ॥ सोएकश्लोककेआरंभमेंहें ॥ औरअंतमेंअर्द्धश्लोकक
रिबालवोधकोंउपसंहारकरतहें ॥ तातेंयहबालवोधमें
अर्द्धश्लोकऔरएकोंनविंसश्लोकहें ॥ याप्रकारदसश्लोक
नकरिश्रीनंदनजीमंगलाचरणकीये ॥ अबकहतहेंजो
औरमतांतरसेंफलजोहें ॥ सोचतुर्विधपुरुषार्थहें ॥ अर्थध
र्मकांममोक्ष यहफलकेअर्थसगरेलोकमेंजीवप्रवर्त्त
होय ॥ साधनकरतहें ॥ ताकरिकेंसगरेजगतमेंयहचतु
र्विधपदार्थहीमुख्य ॥ सबकेमतमेंभयो ॥ सोश्रीआचार्यजी
सोंसह्योनगयो ॥ तबश्रीआचार्यजीभक्तिमारगप्रगटकी
ये ॥ तामेंकेवलश्रीकृष्णपुरुषोत्तम सोईफलनिरूपण
कीये ॥ औरचतुर्विधपुरुषार्थ अर्थधर्मकांममोक्षकोंतुच्छ
करिकें निरूपणकरि ॥ तहांआपनेंमार्गमेंजोश्रीकृष्णसों
परमहामंगलस्वरूप तिनकोंवर्णन याबालवोधमेंक
रतहें ॥ सोउत्तमपदार्थकेकार्यमें विघ्नकृतहोतहें ॥ सो
विघ्नकेदूरिकरणार्थ प्रथमएकश्लोककरिहरिजोभगवां
नसर्वदुःखहर्त्ता तिनकोंनमस्कारकरतहें ॥ सोबालवोधकों
प्रथमश्लोकनमस्कारकोहें ॥ सोश्रीआचार्यजीमहाप्रभु
कहतहें ॥ श्लोक ॥ नत्वाहरिंसदानंदंसर्वसिद्धांतसंग्रहं ॥ बा
लप्रबोधनार्थायवदामिसुविनिश्चितं ॥ १ ॥ याकोअर्थ ॥ अ
बऐसेहरिकोंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनंमस्कारकरतहें
हरिजोभगवांनसदाआनंदरूपहें ॥ औरहरिकेसेहें स
र्वसिद्धांतकोंमूलभूतहें ॥ वेदपुराणसास्त्रस्मृतिसब
मेंहरिसर्वदुःखहर्त्ता तिनहीकोंउत्कर्षहें ॥ औरहरिकेसे